Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 43 अंक-08
कल्पादि सम्वत् 1972949119

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 22 मई से 28 मई 2019 तक
ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी से ज्येष्ठ कृष्ण नवमी 2076 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

राजनीति में बयानबाजी.. पृष्ठ- 3
उपचारक हल्दी... पृष्ठ- 4
श्रीकृष्ण और भावी... पृष्ठ- 5
सावरकर के सपनों... पृष्ठ- 8
कब तक जारी... पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांति–कारियों के प्रेरणा स्रोत पूर्व हिन्दू महासभा अध्यक्ष स्वातंत्र्य वीर सावरकर की जयंती (२८ मई) के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

कमल हासन के हिंदू आंतकवादी वाले बयान पर हिन्दू महासभा की चेतावनी

● संवाददाता ●

लोकसभा चुनाव के आखिरी चरण का चुनाव प्रचार जोरों पर है। चुनावी सरगर्मियों के बीच अभिनेता से नेता बने कमल हासन ने तमिलनाडु में चुनावी प्रचार के दौरान कहा कि भारत का पहला आंतकवादी हिंदू ही था। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत का पहला आंतकवादी हिंदू था, जिसका नाम है। कमल हासन के इस बयान की अखिल भारत हिन्दू महासभा ने आलोचना की। हिन्दू महासभा ने हासन की आलोचना करते हुए कहा कि क्या मुस्लिम वोट हासिल करने के लिए गोडसे के धर्म का जिक्र किया गया। कमल हासन का यह

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम के मामले में चीन से सीखे भारत : हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

चीन ने एक नया कानून पारित किया है, जो अगले पांच सालों के भीतर इस्लाम को चीन के समाजवाद के हिसाब से बदलने की कोशिश करता है। देश में धर्म का पालन कैसे किया जाए, इसे फिर से लिखने के लिए चीन का यह नया कदम है। जानकारी के मुताबिक, चीनमें एक बैठक के बाद सरकारी अधिकारियों ने इस्लाम को समाजवाद के अनुकूल करने और धर्म के क्रिया–कलापों को चीन के हिसाब से करने के कदम को लागू करने के लिए सहमति व्यक्त की। चीन ने हालिया वर्षो में धार्मिक समूहों के साथ धर्म को चीन के संदर्भ में ढालने को लेकर आक्रामक अभियान चलाया है। चीन के कुछ हिस्सों में इस्लाम धर्म का पालन करने की मनाही है। मुस्लिम शख्स को नमाज अदा करने पर, रोजा रखने पर, दाढ़ी बढ़ाने या महिला को हिजाब पहने पाए जाने पर गिरफ्तारी का सामना करना पड़ रहा है। शी जिनपिंग के राष्ट्रपति के बनने के बाद कुछ खास इलाकों उइगर मुसलमानों के लिए काफी सख्ती कर दी गई है। उन्हें मुसलमानों के अलगाववादी और चरमपंथी गतिविधियों में लिप्त होने की निगाह से देखा जाता है। बता दें कि चीन मे करीब दो करोड़ मुसलमान हैं। जहां इस्लाम समेत कुल पांच धर्मो को मान्यता दी गई जिनमें ताओ, कैथोलिक और बौद्ध धर्म भी शामिल हैं। चीन ने १० लाख से ज्यादा उइगर मुसलमानों को सीक्यांग के इनड क्ट्रिनेशन शिविरों में रखा है,

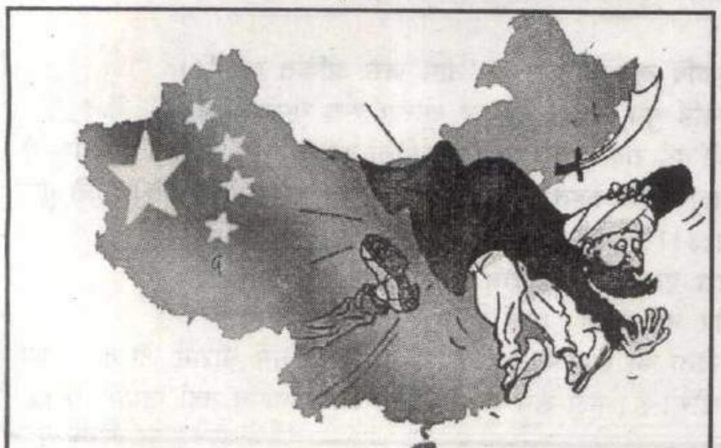

शेष पृष्ठ 10 पर

परमार्थ पथ का लक्ष्य

स्वामी शुकदेव जी महाराज

परमार्थ पथ का लक्ष्य स्थिर बनाए रखने के लिए भोगों से अपने चित्त को उपराम करना ही होगा। गोस्वामी जी के शब्दों में ऐसी निश्चित धारणा बनानी पड़ेगी–

रमा बिलास राम अनुरागी।

तजत वमन इव नर बड़ भागी।।

शरीर की रक्षा के लिए वस्त्रों की आवश्यकता है, श्रृंगार के लिए नहीं। शरीर की रक्षा के लिए भोजन की आवश्यकता है, जिह्वा के स्वाद के लिए नहीं। आज तो कुछ ऐसा विषाक्त वातावरण बन गया है, आवश्यकताओं की कुछ ऐसी बाढ़ सी आई हुई है कि मनुष्य अपने तन, मन की सुध भूले हुए, भोगों के अभावों की पूर्ति के लिए संलगन है। उसे न तो इस लोक की याद है और न परलोक का स्मरण। वह सदैव इसी चिन्ता में निमग्न रहता है कि गुजर कैसे होगी? वह कभी यह विचार नहीं कर पाता कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक, विश्वम्भर, परमपिता परमात्मा चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त सभी के भोजन का प्रबन्ध करता है। और देखो उसी दयामय ने गर्भावस्था में भी हमारी रक्षा की है। क्या उस समय कोई भी हमारा अपना था? सोचो क्या हमारे पुरुषार्थ के द्वारा हमारी रक्षा हुई थी? नहीं कभी नहीं। अरे भोले मानव! तू कितने भ्रम में है। तुझे अपने पुरुषार्थ में अपनी शक्ति जान पड़ती है तू भूल जाता है कि सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर की शक्ति से ही तू शक्तिमान बना हुआ है। इस भ्रम को निकाले बिना वास्तविक शान्ति की उपलब्धि कदापि नहीं हो सकेगी।

परमार्थ पथ के पथिक को प्रत्येक क्षण दृढ़ विश्वास करना होगा, भगवत्कृपा का सम्पादन करना होगा। उसे दृढ़ निश्चय करना होगा कि जो सर्वेश्वर सकल जीवों के भोजन और वस्त्र का अदृष्ट प्रबन्ध करते रहते हैं, वही हमारा भी प्रबन्ध करेंगे। इस प्रकार भगवान पर अटल और अटूट विश्वास रखकर ही हम परमार्थ पथ के पथिक बनकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं। निश्चय करो कि मंगलमय प्रभु का कि हमारी प्रतिकूल परिस्थिति में भी उनकी कौन सी मंगल भावना सन्निहित है। अस्तु विश्वास रखो कि वे सदैव कल्याणमय हैं हमारा सदैव कल्याण ही करेंगे। अक्षय आनन्द की प्राप्ति के लिए अपनी बहिर्मुखी वृत्तियों को अन्तर्मुखी करना परमावश्यक है। महर्षि पतंजलि ने अपने योगशास्त्र में लिखा है 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' अर्थात चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम ही योग है। जैसे तीव्र गति से ध नुष से छोड़ा हुआ तीर अपने एक लक्ष्य की ओर पहुँच जाता है, उसी प्रकार हम को भी अपनी वृत्तियों को अन्तर्मुखी बनाकर क्रमशः अपने लक्ष्य की ओर पहुँचना चाहिए। लक्ष्य के अनुसार ही हमारी सद्गति और दुर्गति होगी। यदि भोगों का लक्ष्य बना हुआ है तो हमें विवश होकर उन्हीं योनियों में जाना पड़ेगा जिनमें कि सुविधा से उन मनोनुकूल भोगों की प्राप्ति हो सकती है।

अतएव प्रमाद रहित होकर सदैव अपने लक्ष्य की ओर ध्यान रखना चाहिए। प्रमाद और आलस्य जीवात्मा के परम शत्रु हैं। भगवान का निवास स्थान हृदय है अस्तु वे हृदय में ही देखते हैं, हृदय की ही परख करते हैं। अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक डायरी बनाओ, अपने संकल्पों की ओर ध्यान रखते हुए मन की गतिविधि पर सावधानी से ध्यान रखो। मन और इन्द्रियों को कभी अपना मित्र न समझो, असावधानी होते ही यह तुम्हें विषयों के गहरे गर्त में जा पटकेंगी। पाणिग्रहण संस्कार होने के पश्चात कन्या जिसे अपना पति बना लेती है, उसी के साथ अपने समस्त जीवन को व्यतीत कर देती है, विवाह के बाद पति का परित्याग घोर पातक माना गया है। ठीक उसी प्रकार हमारे परमार्थ साधन का जो लक्ष्य बन गया वह बन गया, अब उसमें हेरफेर करना उचित नहीं। स्वयंवर में राजकुमारी ने जिसके गले में वरमाला डाल दी वही उसकी पति हो चुका। हमारा हृदय भूमि है। लक्ष्य को बीज रूप समझना चाहिए, जैसा बीज होगा, भूमि से उसी प्रकार के फल की प्राप्ति होगी। यदि गन्ने का बीज खेत में डाला जाएगा तो मीठा और सुस्वादु रस बन जाएगा और मिर्चों को खेत में बोने से कड़वी मिर्चें मिलेंगी। इसी प्रकार जैसा शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस वक्त अति संवेदनशील मुद्दों पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। आपका एक गलत कदम सारी योजनाओं पर पानी फेर सकता है। अतः आप स्व चिन्तन करें तो बेहतर रहेगा। कैरियर सम्बन्धी मामलों में लेट–लतीफ करना उचित नहीं है।

वृष : कुछ लोगों को भूत में किय गए कर्मो का वर्तमान में लाभ मिलेगा जिससे आप–अपने को पुनः उर्जावान महसूस करेंगे। कुछ जरूरी कार्यो के प्रति काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। आपकी नयीं योजनाओं की लोग सराहना भी करेंगे।

मिथुन : आप–अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करें न कि दूसरों को देखकर। साहस व पराक्रम के साथ किये गये प्रत्येक कार्य में आपको आशा के अनुरूप सफलता प्राप्त होगी। जिस राह में किसी प्रकार की बाधा न आयें तो यह समझना चाहिए कि आप गलत रास्ते पर चल रहें है।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लम्बित कार्यो का शीघ्र ही समाधान होगा जिसके फलस्वरूप आप नयें कार्यो का शुभारम्भ कर सकते है। पारिवारिक दायित्वों का निर्वाहन करने के लिए काफी त्याग करने की जरूरत है। अनचाही यात्रा न ही करें तो बेहतर रहेगा।

सिंह : नयें लोगों को रोजी व रोजगार के नयें अवसर प्रदान होंगे। प्रतीकात्मक त्याग ही परिवार में आपकी प्रतिष्ठा लौटा सकता है। हर नयें सम्बन्ध के प्रति गहरी व पैनी नजर रखने की आवश्यकता है। व्यवसायी वर्ग धन निवेश के मामलें में रिस्क लेने की कोशिश न करें।

कन्या : यह सप्ताह आपके लिए सकारात्मक परिणाम लेकर आयेगा। रोजगार व कैरियर के मामलें में शुभ संकेत नजर आ रहे है। हर तरफ आप चर्चा के केन्द्र बने रहेंगे जिससे आपका सामाजिक मान–सम्मान बढ़ेगा।

तुला : इस सप्ताह अनावश्यक खर्चो पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। समय की पाबन्दी आपके व्यक्तित्व में चार–चांद लगा देगी। पाइल्स रोगियों को अपने खान–पान पर विशेष सावधानी बरतनें की जरूरत है।

वृश्चिक : इस सप्ताह परिस्थितियां आपके अनुकूल रहेगी। सोंची–समझी रणनीतियॉ कारगर सिद्ध होगी। कुछ लोग अपनी जीविका को लेकर चिन्तित रह सकते है। समय और सम्बन्ध दोनों में सामंजस्य बनायें रखने आपका लिए हितकारी रहेगा।

धनु : किसी कारणवश मन उद्वेलित हो सकता है। किसी धार्मिक व्यक्ति का साथ व सहयोग मिलेगा जिससे मानसिक अशान्ति दूर होगी। प्रत्येक व्यक्ति एक चरम सम्भावना है। आपके पास वह सब कुछ है जिससे प्रत्येक वस्तु हासिल की जा सकती है।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों को अनचाहे सम्बन्धों को ढोना पड़ सकता है। गैर जिम्मेदार लोगों से अधिक नजदीकिंया न बढ़ायें अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है। हर कदम सोंच–समझकर रखने की आवश्यकता है। परिवार की बातों को सबसे साझा न करें।

कुम्भ : कलान्तर में किये गये कर्मो का प्रतिफल आपके जीवन में चार–चॉद लगा देगा। अकारण किसी चिन्ता के कारण मन व्यथित हो सकता है, अतः आप–अपने मन को केन्द्रित करने का प्रयास करें। व्यावसायिक गतिविधियों में आपकी व्यस्तता रंग लायेगी।

मीन : इस सप्ताह आपके जीवन में कुछ नयें लोगों का आगमन हो सकता है। विवाह योग्य व्यक्तियों के रिश्ते पक्के हो सकते है। कोई पुरानी खोई हुयी वस्तु या व्यक्ति वापस आ सकता है। ऑफिस वाले लोग अपनी उपयोगिता बनायें रखें। **पं० दीनानाथ तिवारी**

श्रीरामचरितमानस

भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। रमा नाम बिनु सोह न सोऊ।।
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी।।

जो अच्छे कवि के द्वारा रची हुई बड़ी अनूठी कविता है, वह भी रामनाम के बिना शोभा नहीं पाती। जैसे चन्द्रमा के समान मुखवाली सुन्दर स्त्री सब प्रकार से सुसज्जित होने पर भी वस्त्र के बिना शोभा नहीं देती।।२।।

सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी।।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही।।

इसके विपरीत, कुकविकी रची हुई सब गुणों से रहित कविता को भी, राम के नाम एवं यश से अंकित जानकर, बुद्धिमान् लोग आदरपूर्वक कहते और सुनते हैं, क्योंकि संतजन भौंरे की भांति गुण ही को ग्रहण करने वाले होते हैं।।३।।

जदपि कबित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं।।
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बड़प्पनु पावा।।

यद्यपि मेरी इस रचना में कविता का एक भी रस नहीं है, तथापि इसमें श्रीराम जी का प्रताप प्रकट है। मेरे मन में यहीं एक भरोसा है। भले संग से भला, किसने बड़प्पन नहीं पाया?।।४।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 22 मई से 28 मई 2019 तक

अध्यक्षीय

कश्मीर में आईएस के जड़ जमाने का खतरा

वैसे तो कश्मीर में धीरे–धीरे आतंकवाद का सफाया हो रहा है लेकिन इसी बीच दुनिया का खूंखार आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट ने कुछ ही दिनों पहले श्रीलंका में हुए हमलों की जिम्मेदारी के बाद भारत में अपनी जड़ें जमाने का दावा किया है। दहशतगर्द संगठन ने एक अलग नए प्रांत का ऐलान किया है, जिसके जरिए वह भारतीयं उपमहाद्वीप पर फोकस करेगा। यही नहीं आतंकी संगठन ने इसकी एक तस्वीर भी जारी की है और दावा किया है कि कश्मीर में सुरक्षाबलों के साथ हुई मुठभेड़ में ढेर हुआ आतंकी इशफाक अहमद सोफी भी उसके संगठन से जुड़ा था। हालांकि जम्मू–कश्मीर पुलिस ने कहा कि सोफी इस्लामिक स्टेट जम्मू–कश्मीर का आखिरी जीवित सदस्य था, जिसकी मौत के बाद से घाटी में आईएस का सफाया हो गया है।.बता दें कि इस्लामिक स्टेट ने अपने बयान में विलाय–ए–हिंद यानी भारतीय प्रांत का जिक्र किया है, लेकिन जम्मू–कश्मीर का जिक्र नहीं किया है। आतंकी संगठन से जुड़े कुछ लोगों ने एजेंसियों को पूछताछ के दौरान भी इस संबंध में जानकारी दी थी। हालांकि आईएस के कब्जे में किसी प्रांत के न होने या फिर प्रभाव तक होने के बावजूद उसका इस तरह का बयान बड़बोलापन ही लगता है। कश्मीर में आईएस की मौजूदगी और अलग प्रांत बनाने की संभावनाओं को तब बल मिला था, जब हालांकि हाल ही में इस्लामिक स्टेट के सरगना अबू बकर अल–बगदादी का एक नया वीडियो सामने आया था। इस वीडियो में सरगना दहशतगर्द संगठन के प्रभाव वाले नए इलाकों के बारे में बात करता दिख रहा है। ऐसे में इस्लामिक स्टेट के इस बयान को पूरी तरह से खारिज भी नहीं किया जा सकता है। सूत्रों के मुताबिक अब तक इस्लामिक स्टेट खोरासान प्रांत का जिक्र करता रहा है। इसके जरिए वह अफगानिस्तान और उसके पड़ोस के इलाके में गतिविधियां बढ़ाता रहा है, लेकिन अब उसने इस बात के संकेत दिए हैं कि वह सीधे तौर पर जम्मू–कश्मीर में दखल देने की कोशिश में है और यहां आतंकियों से सीधी डीलिंग की कोशिश कर सकता है। पुलिस यह मानती है की घाटी में ऐसी विचारधारा को फैलाने के लिए कुछ तत्व कोशिश में लगे हैं, लेकिन पुलिस नहीं मान रही है कि इस विचारधारा से जुड़े आतंकी संगठन आईएसआईएस की पकड़ कश्मीर में मजबूत है। राज्य के डीजीपी दिलबाग सिंह के मुताबिक, कश्मीर में आईएसआईएस की मौजूदगी ज्यादा नहीं है। हालांकि युवाओं के एक वर्ग को इस विचारधारा के साथ जोड़ने की पूरी कोशिश हो रही है। पुलिस का यह बयान कश्मीर घाटी में आतंकी संगठन आईएस को लेकर चल रही खबरों को खारिज करने से कहीं ज्यादा खुद के बचाव का है। घाटी की पुलिस आज से नहीं, बल्कि तब से आईएसआईएस की मौजूदगी को खारिज कर रही है, जब से सीरिया में यह संगठन अपने शबाब पर था। लेकिन पुलिस की यह कोशिश कहीं घाटी में किसी बड़े खतरे को अनदेखा तो नहीं कर रही, इस पर भी विचार करना होगा। सरकार को गम्भीरता से विचार कर सख्ती से इसका हल ढूंढना होगा।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

राजनीति में बयानबाजी का गिरता स्तर

देश में कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनका अभी तक किसी भी राजनीतिक पार्टी की सरकार हल नहीं निकाल पाई है, परंतु समय–समय पर विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के राजनेताओं की बेतुकी, शर्मनाक और अभद्र बयानबाजी सामने आती रहती है। राजनेता अपने पद की मर्यादा का भी ख्याल नहीं रखते हैं। सोचने वाली बात तो यह है कि पार्टी की हाईकमान ऐसी घटिया बयानबाजी करने वालों के खिलाफ सख्ती क्यों नहीं दिखाती है? बेतुकी, अभद्र भाषा को आमजन कभी पसंद नहीं करता, इसलिए नेताओं को समझना होगा कि ऐसी बयानबाजी से वे स्वयं के चरित्र पर दाग लगा रहे हैं। चुनाव आयोग को भी चाहिए कि वह ऐसी अभद्र और घटिया बातें करने वालों पर लगाम कसने के लिए उचित कदम उठाए, ताकि हमारे देश के बड़बोले नेताओं के कारण राजनीति की बिगड़ती छवि को सुधारा जा सके। यह साल राजनीतिक बयानबाजी के नजरिये से बेहद रोचक और कभी– कभी निराशाजनक रहा। कई बार बयानों की वजह से मुस्कान खिली, तो कई बार राजनीतिक बयानबाजी के गिरते स्तर ने निराश कर दिया। चौकीदार चोर है, मसखरा राजकुमार, नामदार और कामदार यह कुछ ऐसे शब्द हैं जिन्होंने राजनीतिक बयानबाजी में नेताओं को नये शब्द दिये। रामभक्त हनुमान की जाति राजनीति में भगवान राम की चर्चा नयी नहीं है। भगवान राम के राजनीतिक इस्तेमाल के बाद उनके भक्त हनुमान को भी अब राजनीतिक बयानबाजी का हिस्सा बना लिया गया है। योगी के इस बयान के बाद राजनीति के दूसरे दिग्गजों ने भी हनुमान जी की जाति को लेकर रिसर्च शुरू कर दिया और जमकर बयानबाजी की। किसी ने उन्हें जाट तो किसी ने मुस्लिम तक बता दिया। बयानबाजी सिर्फ जाति तक सीमित नहीं रही उन्हें देश के बाहर का भी बता दिया गया। बड़े नेताओं की तुलना कीड़े मकोड़ों से स्वास्थ्य राज्य मंत्री और बिहार के नेता अश्विनी कुमार चौबे ने कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी की तुलना नाली के कीड़े से कर दी। प्रधानमंत्री की तारीफ करते हुए मोदी को आकाश तो राहुल गांधी को नाली का कीड़ा बता दिया। पीएम मोदी गगन के जैसे हैं और कांग्रेस अध्यक्ष का आकार नाली के कीड़े की तरह। सिर्फ अश्विनी चौबे ही नहीं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर ने अपनी किताब **द पैराडॉक्सिकल प्राइम मिनिस्टर** में थरूर ने मोदी को शिवलिंग पर बैठे बिच्छू की तरह बता दिया। थरूर ने कहा, शिवलिंग पर बैठे बिच्छू को आप ना तो हाथों से और ना ही चप्पल से मार सकते हैं। उन्होंने इस टिप्पणी के साथ आरएसएस के एक अज्ञात व्यक्ति की टिप्पणी का जिक्र करते हुए उक्त बातें लिखी थी। मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान सरकार में मंत्री रह चुके बालकृष्ण पाटीदार ने किसानों की आत्महत्या को लेकर अजीब बयान दिया था, उन्होंने कहा, सुसाइड कौन नहीं करता? व्यापारी करता है, पुलिस कमिश्नर भी करता है. यह पूरे वर्ल्ड की प्रॉब्लम है। सुसाइड का कारण जो सुसाइड कर रहा है, सिर्फ उसे पता है। हम लोग सिर्फ अंदाजा लगाते हैं। राजनीतिक बयानबाजी में पार कर दी नेताओं ने सीमा कई ऐसे बयान है जिसमें नेता अक्सर सीमा लांघ जाते हैं। चुनावी मंच से किसी भी नेता पर की गयी निजी टिप्पणी इस हद तक पहुंच जाती है कि चर्चा का विषय बन जाती है। भारतीय राजनीति के गिरते स्तर को लेकर चर्चा हुई लेकिन इन बयानों पर गौर कीजिए आप पायेंगे कि इसके गिरते स्तर के सुधरने की संभावना कितनी है। बिहार के दिग्गज नेता शरद यादव ने वसुंधरा राजे को मोटी कह दिया। हरियाणा के स्वास्थ मंत्री और भाजपा नेता अनिल विज ने राहुल गांधी की तुलना निपाह वायरस से की। उन्होंने कहा, राहुल गांधी जिस पार्टी के संपर्क में आयेंगे वह खत्म हो जायेगी। कांग्रेस नेता राज बब्बर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जिक्र करते हुए, डॉलर की तुलना में रुपये की गिरावट का जिक्र करते हुए पीएम मोदी की मां की उम्र से कर दी थी। बयानबाजी यही तक नहीं रुकी कांग्रेस के नेता विलासराव ने पीएम मोदी के पिता का जिक्र करते हुए कहा, कोई नहीं जानता कि उनके पिता कौन थे जबकि राहुल गांधी की पूरी पीढ़ी को दुनिया जानती है। राजनीति में इस तरह के बयान नये नहीं है, रेप, किसान आत्महत्या, सेना के जवानों की शहादत, पर भी नेता टिप्पणी कर चुके हैं। ऐसे कई बयान चुनावी प्रचार के दौरान सामने आते रहे हैं जिससे राजनीति के गिरते स्तर का पता चलता है। इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विपक्षियों पर की गई कई टिप्पणियां भी उनके कद के अनुरूप नहीं रही हैं।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

उपचारक हल्दी

✍ डॉ. अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव

वैज्ञानिक उपलब्धियों ने लगभग सभी सरल और दुष्कर बीमारियों का उपचार ढूँढ निकाला है और थोड़ी बहुत ऐसी घातक बीमारियों, जिन्हें ला–इलाज समझा जा रहा है, उन पर शोध जारी है। इतनी सफलता के बावजूद, कुछ लोग इन दवाओं के प्रयोग से दूर रहना चाहते हैं। ऐसे लोगों का विश्वास घरेलू उपचार में ज्यादा रहता है, क्योंकि वे जानते हैं कि एलोपैथिक दवाएँ नुकसान भी कर सकती हैं, परंतु घरेलू उपचार से नुकसान नहीं होता है।

हल्दी : सदियों से हल्दी त्वचा के लिए श्रेष्ठ मानी जाती रही है। इसका विभिन्न रूपों में इस्तेमाल किया जाता है। यदि चोट या फोड़े–फुँसियों से त्वचा में गड्डे जैसे पड़ रहे हों, तो हल्दी पीसकर लेप बना लें और घाव वाले स्थान पर लगाएँ। शीघ्र ही नई त्वचा निकल आएगी।

खाज-खुजली : खुजली ग्रसित त्वचा पर भी हल्दी का तेल मलिए। रक्त की सफाई के लिए, हल्दी पीसकर शहद और जंगली बेर के साथ मिलाकर छोटी–छोटी गोलियाँ बनाकर सेवन करें। प्रतिदिन सुबह–शाम दो–दो गोलियाँ चूसिए। इससे रक्त भी साफ होगा और दाद, खाज जैसी परेशानियों से स्थायी छुटकारा भी मिल जाएगा। हल्दी और बेसन को सरसों के तेल में मिलाकर, लेप बना लीजिए। सारे शरीर में उबटन लगाने से भी खाज–खुजली की संभावना खत्म हो जाती है।

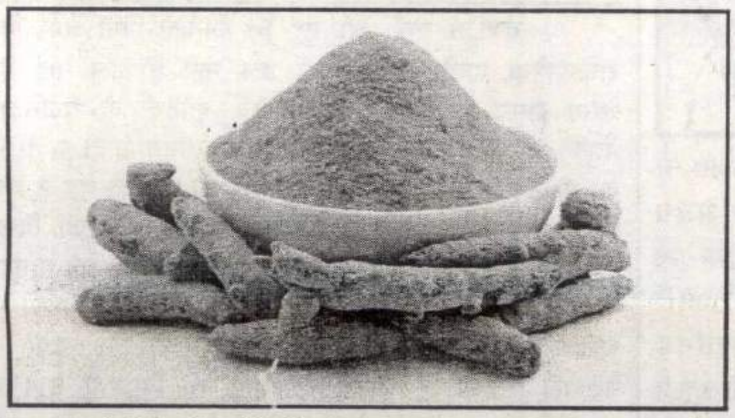

घमौरियाँ : इसकी तकलीफ आमतौर पर गर्मियों में होती है और इसका मुख्य कारण है–पसीना। पसीना आते ही उसे पोंछ दें और ऐसे मौसम में अधिकतर सूती व खादी के कपड़े पहनें, जिससे पसीना खुद–ब–खुद सूखता रहे। कच्ची हल्दी की आधा किलो गाँठ पीसकर, रस निकालकर उबाल लीजिए। ठंडा होने पर दो सौ ग्राम शहद मिलाकर किसी बंद काँच के बर्तन में रख दें। किसी फल (फालसा, अनार) के शर्बत के साथ २–३ चम्मच हल्दी का रस मिलाकर पीजिए। इससे शरीर की सारी गर्मी निकल जाएगी। यह दिन में ४–५ बार पी सकते हैं।

चेचक के दाग : यदि चेचक के दाग ताजे हैं, तो निश्चित रूप से हल्दी का उबटन उन्हें दूर कर सकता है। चेचक के दानों वाले स्थान पर (पहला स्नान होने के बाद) हल्दी, गेहूँ का आटा और गाय के दूध के फेन से बना उबटन, दिन में दो बार लगाएँ। हो सकता है दाग पूरी तरह नहीं भी मिटें, लेकिन काफ़ी हल्के अवश्य हो जाएँगे।

सुजाक रोग : यह भी त्वचा की भयानक बीमारियों में गिना जाता है। यदि सुजाक रोग से ग्रस्त हैं, तो दिन में ३–४ बार हल्दी चूर्ण की फांकी, पानी के साथ लीजिए अथवा २० ग्राम पिसी हल्दी, २०० ग्राम पिसी फिटकरी और ३० ग्राम पिसा गुड़ मिलाकर, छोटी–छोटी गोलियाँ बना लीजिए। प्रत्येक दिन खाली पेट, गोली पानी के साथ निगल लीजिए। इस दौरान १०–१५ दिनों तक तैलिय व गरिष्ठ भोजन का सेवन बंद कर दीजिए।

एग्जिमा : हल्दी की गाँठ को घिसकर गाढ़ा लेप तैयार कर लीजिए, एग्जिमा वाले स्थान पर लगाइए, राहत मिलेगी।

फोड़े-फुंसियाँ : यह आमतौर पर खून की खराबी से उत्पन्न होती हैं। एक पाव ताजी हल्दी, २ लीटर पानी में उबालकर, ठंडा कीजिए। इसमें २५० ग्राम शहद मिलाकर सुरक्षित रख लें। खाने के आधे घंटे बाद इसका सेवन करें। यह खून साफ करेगा और भविष्य के किसी भी त्वचा के रोग से मुक्ति दिलाएगा।

झाइयाँ : सस्ते व ढेर सारे सौंदर्य प्रसाधन प्रयोग करने वालों को ही इस बीमारी का शिकार होना पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए हल्दी सस्ती व शीघ्र लाभकारी इलाज मानी गई है। २० ग्राम हल्दी में पीपल या बरगद के दूध को मिलाकर, उबटन तैयार कर लीजिए। दिन में दो बार इसका लेप लगाएँ। सुबह नहाने से एक घण्टे पूर्व ही लेप लगाकर नहाएँ। १०–१२ दिन में झाइयाँ समाप्त हो जाएँगी और त्वचा पर नया निखार आ जाएगा।

देश को औकात इनकी दूर करना चाहिए

वतन की भी अहमियत का ध्यान करना चाहिए।
बाज आकर के उन्हें अब भी सुधरना चाहिए।
जो वतन की बुलंदी भी कर नहीं सकते सहन।
शर्म के पानी में उनको डूब मरना चाहिए।।
राजनेता भी अगर चूहे बनें तो गम नहीं।
पर कवच अपने वतन का नहिं कुतरना चाहिए।।
शत्रु के नुक्सान का सबूत जिनको चाहिए।
उन्हें सीमा–पार जाकर ज्ञात करना चाहिए।।
हिन्द सेना का सबलतम शौर्य देखा विश्व ने।
दुश्मनों के स्वरों में तो स्वर न भरना चाहिए।।
शहादत क्या है शहीदों के घरों से पूछिए।
देश के तो जख्मों में नहिं नमक भरना चाहिए।।
देश है तो देश की सरकार शासक हैं सभी।
राष्ट्र की नहिं अस्मिता का चीर हरना चाहिए।।
सैन्य–बल पर शक जिन्हें वह शहीदों के घर चलें।
परिजनों के धैर्य पर नहिं वार करना चाहिए।।
राष्ट्र की सेना पुलिस–बल जाँ हथेली पर धरे।
दे इन्हें सम्मान इनमें जोश भरना चाहिए।।
जो इन्हीं के शौर्य पर उंगली उठाते हैं सदा।
देश को औकात इनकी दूर करना चाहिए।।

लक्ष्मी प्रसाद गुप्त

गुणकारी औषधि अलसी

आजकल भागदौड़ की जिंदगी में हम जंकफूड और फास्ट फूड खाते हैं। इतना ही नहीं, हम व्यायाम एवं योग को भूलकर इतने आलसी हो गए हैं कि दरवाजा बंद करने, गाड़ी चलाने, टी.वी. का चैनल बदलने आदि कार्यों के लिए भी हम रिमोट का उपयोग करने लगे हैं। यदि हमें इधर–उधर जाना हो, तो हम पैदल चलकर नहीं जाते अपितु दुपहिया अथवा चार पहिया वाहन का उपयोग करते हैं। यही कारण है कि हमारी युवा पीढ़ी ब्लडप्रेशर, हार्ट अटैक, डिप्रेशन जैसी बीमारियों की चपेट में आ रही है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए योग, व्यायाम और ऐसे आहार की जरूरत होती है, जिसमें भरपूर प्रोटीन, विटामिन एवं मिनरल हों।

अलसी एक ऐसा आहार है, जिसमें प्रोटीन, फाइबर, ओमेगा–३, फेटी एसिड, विटामिन बी एवं सी, जिंक, कैल्शियम, आयरन, कॉपर आदि तत्व होते हैं। अलसी का सेवन हर उम्र में लाभदायक है। अलसी शरीर की रक्षा प्रणाली को सुदृढ़ कर, शरीर को बाह्य संक्रमण से बचाती है। सुपर सीडस के नाम से मशहूर, अलसी को हम किसी भी रूप में खाने में शामिल कर सकते हैं। इसका बाहरी छिलका सख्त होने के कारण इसे पीसकर खाने से जल्दी और ज्यादा लाभ मिलता है। प्रतिदिन हमें २५–३० ग्राम अलसी का सेवन करना चाहिए। इसको मिक्सी में सूखी पीसकर, आटे में मिलाकर रोटी, परांठे आदि बनाकर खाना चाहिए। इसका पाउडर सब्जी, दही, दाल, सलाद आदि में मिलाकर खाना भी लाभदायक रहता है।

अलसी निम्न रोगों के निवारण में अचूक दवा है : यह कैंसर, ब्लडप्रेशर एवं मधुमेह से बचाती है तथा मोटापे को कम करती है। कब्ज को खत्म करती है, रक्त को पतला बनाती है एवं रक्त नलियों की सफाई करती है। ये कोलेस्ट्रोल, ब्लडप्रेशर एवं हृदय को सही रखती है। इस तरह अलसी हार्ट अटैक के कारणों पर रोक लगाती है। त्वचा, केश और नाखूनों को सुदृढ़ बनाती है। मुँहासे, एग्जिमा, दाद, खाज–खुजली, डैन्ड्रफ, बाल झड़ना आदि अलसी के उपयोग से ठीक होते हैं। इसके बीजों को ठंडे जल के साथ पीसकर लेप करने से सिरदर्द, सूजन, घाव आदि में लाभ मिलता है। इसके तेल में सौंठ का चूर्ण मिलाकर मालिश करने से कमर दर्द में राहत मिलती है। इसका तेल आँखों के लिए हितकारी है। इसके शेष पृष्ठ 11 पर

श्रीकृष्ण और भावी जगत

मुंशी प्रेमचंद

संस्कृति के स्मरण–बिंदु... प्रेमचन्द के लेखन में संकेतक की तरह जगह–जगह खड़े दिखते हैं। तभी तो वह लिखते हैं–जब तक कर्मयोग के तत्व को नहीं समझा जाएगा, तब तक संसार स्वार्थ के पंजे में जकड़ा रहेगा। लेकिन अगर इसके गूढ़ रहस्य को समझ लिया तो मोक्ष का रास्ता पा लिया।...

मनुष्यों को आदिकाल से सुख और शान्ति की खोज रही है और अन्त तक रहेगी। मानव सभ्यता का इतिहास इसी खोज की कथा है। जिसने इस रहस्य को जितना अधिक समझा वह उतना ही ज्ञानी समझा गया। लोग भिन्न–भिन्न मार्गों से चले। किसी ने योग का मार्ग लिया, किसी ने तप का, किसी ने भक्ति का, किसी ने ज्ञान का, किन्तु त्याग सभी वदों का स्थायी लक्षण था। निवृत्ति की दुहाई सभी दे रह हैं। सुख का मूल निवृत्ति है, सब ने इसी तत्व का प्रतिपादन किया। मोक्ष, आवागमन के बन्धन से छूट जाना, सुख और शान्ति की चरम सीमा है।

मोक्ष–प्राप्ति के भिन्न–भिन्न मार्ग हैं।

सोचिए कितना महान सत्य है! कितना मौलिक आदर्श! निवृत्ति मानव स्वभाव से मेल नहीं खाती। उसके मार्ग पर चलने वाले विशिष्ट जन ही होंगे। जनसाधारण के लिए वह मार्ग नहीं है। फिर उनके लिए धर्म का क्या आदर्श रह जाता है? निवृत्ति मार्ग का पथिक कर्म के बंधन में फंसे हुए प्राणियों से अपने को यदि ऊँचा नहीं तो पृथक अवश्य समझता है।

कर्म मनुष्य के लिए स्वाभाविक क्रिया है। आँखें हैं, तो देखेगा, पाँव है तो चलेगा, पेट है तो खाएगा। कर्म के पूर्ण विनाश की तो कल्पना भी नहीं हो सकती। समाधि भी तो कर्म है। मौन रहना भी कर्म है। सोचना भी कर्म है, नित्य कर्म हो या निमित्त कर्म, आप कर्म के फंदे से नहीं निकल सकते। फिर कर्म सदैव बंधन ही क्यों हो? उससे परमार्थ भी तो किया जा सकता है, सेवा भी तो की जा सकती है।

तत्व यह निकला कि स्वार्थ भाव से कोई कर्म न किया जाए, वरन जितने कर्म हों, यज्ञार्थ भाव से, निष्काम भाव से ही किए जाएँ। यहाँ कर्म का आनन्द तो मिलता है, कर्म से उत्पन्न होने वाला दुःख नहीं मिलता। न कोई भेद है न द्वेष है।.... कर्म में पुरुषार्थ भी तो है।

लेकिन कर्मयोग के आदर्श पर जमे रहना छोटी बात नहीं। जंगल में समाधि लगाकर बैठ जाना उतना कठिन नहीं है जितना कर्तव्य की वेदी पर अपना बलिदान करना। अपने कर्मों में लगा रहना और लाभ के प्रति उदासीन रहना वीरों का ही काम है। और ऐसे कर्मयोगी संसार में विरले ही होते हैं। ममत्व के पंजे से निकलना सिंह के मुँह से निकलना है।

समय–समय पर ज्ञानी पुरुष अवतरित होते रहते हैं और ममत्व के बंधन को, दुख के मूल को तोड़ने का उद्योग करते हैं, पर यह बंधन झटके पाकर कुछ और दृढ़ होता जाता है। यहाँ तक कि आज इस संसार में ममत्व का अकंटक राज्य है। भारतीय ममत्व पर कुछ रोक थी, कुछ निग्रह था क्योंकि वह अपने परम्परागत संस्कारों से अपने को मुक्त नहीं कर सकता था। बुद्ध और अशोक जैसे चरित्र, जो प्रभुता को दुत्कार कर ज्ञानार्जन के लिए निकल खड़े हुए।

भारत की संस्कृति धर्म भित्ति पर खड़ी की गई थी। हमारे समाज और राज्य की सम्पूर्ण व्यवस्था धर्म पर अवलम्बित थी। लेकिन पाश्चात्य देशों में धर्म को जीवन से पृथक रखा गया, जिसका फल यह हुआ कि आज संसार में जीवन–संग्राम ने प्रचण्ड रूप धारण कर रखा है और यह ईश्वरहीन सभ्यता किसी संक्रामक रोग की भाँति फैलती जा रही है।

जातियों और राष्ट्रों में अविश्वास है, आपस में संघर्ष। स्वामी और मजदूर, अमीर–गरीब में भीषण युद्ध हो रहा है। धन और प्रभुता की तृष्णा एक विकराल जन्तु की भाँति समस्त सभ्य संसार को निगलती चली जा रही है। उद्धार की जो युक्तियाँ सोची जाती हैं वे फलीभूत नहीं होतीं। हरेक सशस्त्र राष्ट्र दूसरे की गर्दन दबा देने की घात में है। निर्बल जातियाँ उनके पैरों के नीचे पड़ी अन्तिम साँसें ले रही हैं। मनुष्य एक मशीन बनकर रह गया है। जीवन में कृत्रिमता बढ़ती जाती है। सम्पदा के पीछे संसार पागल हो रहा है। उसकी प्राप्ति में किसी प्रकार के बंधन नहीं, बलवान राष्ट्र निर्बल राष्ट्रों का, बलवान व्यक्ति निर्बल व्यक्तियों का गला दबा रहे हैं।

संघर्ष की व्यापक ध्वनि सुनाई दे रही है। कहीं शान्ति नहीं, कहीं सुख नहीं। ईश्वरहीन उद्योग में शान्ति कहाँ? हम नहीं समझते कि किसी युग में स्वार्थ का इतना प्राबल्य था। विचारवान लोग कह रहे हैं कि यह प्रलय का मार्ग है, वह संघर्ष एक दिन अग्नि की भाँति फैलकर सारे राष्ट्रों को भस्म कर डालेगा।

ऐसे समय में संसार के उद्धार का एक ही उपाय है और वह है कर्मयोग। इसी तत्व को सम्मुख रखकर हम ममत्व, स्वार्थ और संघर्ष के पंजे से छूट सकते हैं। स्वार्थ का विलुप्त होना ही प्रेम का प्रसार है, उसी भाँति जैसे अंधकार का हटना ही प्रकाश है। हिंसा शेष पृष्ठ 11 पर

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर की १३६ वीं जयन्ती दिनांक २८ मई २०१६

आप १६३७ में हिन्दू महासभा में आए। १६३८ में आपको राष्ट्रीय अध्यक्ष बना दिया गया। आपने अहमदाबाद अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण में घोषणा कर दी कि अब हिन्दू महासभा को राजनीतिक दल घोषित किया जाता है और कांग्रेस से सम्बन्ध समाप्त किए जाते हैं। कार्य करने का आधार होगा। १. राजनीति का हिन्दू करण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण २. धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीयता बदल जाती है। आप लगातार छह वर्ष तक राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। उनके द्वारा दिए गए भाषणों से पार्टी का विस्तार हुआ और प्रभाव बढ़ा। हिन्दू महासभा के राजनीतिक दल बनते ही मालवीय जी ने घोषणा कर दी कि वे अब कांग्रेस में ही रहेंगे। १६४६ में जब मालवीय जी को पता चला कि कांग्रेस धर्म के आधार पर देश का विभाजन स्वीकार करने वाली है तब उन्होंने हिन्दू महासभा छोड़ने को जीवन की सबसे बड़ी गलती माना लेकिन मालवीय जी के अनुयायी वही गलती लगातार कर रहे हैं।

असम में नागाओं को ईसाई बनाया जा रहा है तब १६४० में आपने नागाओं का धर्म परिवर्तन रोकने की मांग की थी जिसकी ओर कोई कार्रवाई नहीं की गई। स्वतन्त्र भारत में धर्म परिवर्तन जारी रहा। धर्म बदल कर नागा हिंसक–गोभक्षक और देश द्रोही हो गए। १६६३ में ईसाई समर्थक नेहरू सरकार को असम को विभाजित करके ईसाई धर्मी नागालैंड नाम का राज्य बनाना पड़ा। अब वे ग्रेटर नागा लैन्ड की मांग कर रहे हैं।

जम्मू–कश्मीर रियासत के बारे में आपने १६४१ में चेतावनी दी थी जिसका ध्यान नहीं रखा गया। आज आधी रियासत चीन और पाकिस्तान के अवैध कब्जे में है जबकि आधे पर विवाद चल रहा है। यदि पटेल ने विलय कराया होता तो पूरी रियासत भारत के पास होती और मुख्यमंत्री सदैव हिन्दू ही बनता तब पाकिस्तान मौन रहता। २ अगस्त १६४२ को आपने भविष्य वाणी की थी कि कांग्रेस का भारत छोड़ों आन्दोलन, भारत तोड़ों आन्दोलन बन जाएगा जो १६४७ में सही सिद्ध हुआ जब कांग्रेस ने पाकिस्तान बनाने की मांग स्वीकार कर ली।

मुर्दा : नासमझ हिन्दुओं को मुस्लिम तुष्टीकरण नीतियां सही लगीं अतः उन्होंने गांधीवाद का समर्थन किया और अभी तक कर रहे हैं। हिन्दू महासभा को १६४५–४६ के चुनावों में १६ प्रतिशत वोट मिली थी। अब लालची–कुर्सीवादी हिन्दुओं ने हिन्दू महासभा को मृत प्रायः की स्थिति में पहुंच दिया है। खंडित भारत में गांधी ने एक तिहाई मुस्लिमों को जबर्दस्ती पाकिस्तान नहीं भेजा। ७१ वर्षों में उनका प्रतिशत १० से बढ़कर १७ हो गया है। वे अभी भी आक्रामक हैं और हिन्दू बचावकारी। मुस्लिम लीग ने १६४७ में नारा लगाया था– हंस कर लिया है पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान। पाकिस्तान इसी नीति पर चलकर आतंकवादी भेजता है। सावरकरवाद को अपनाकर आक्रामक सोच का बनकर हिन्दू शान से रह सकता है।

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक, बुलन्दशहर

भड़काऊ व बिगड़ैल आजम खाँ

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

लोकतांत्रिक मूल्यों का इतना अधिक बलात्कार सम्भवतः पहले कभी नही हुआ होगा। प्रजातंत्र में राज सत्ता पाने के लिए नेताओं में ऐसी कोई योग्यता अनिवार्य होनी चाहिये जिससे वह कम से कम सभ्यता व संस्कृति के विरुद्ध कोई आचरण न कर पाये। उसकी प्राथमिकता राष्ट्रहित व समाज के प्रति सकारात्मक होनी चाहिये। लोकतंत्र में अनेक अधिकार होने का अर्थ यह नही है कि उनका अपनी इच्छानुसार दुरुपयोग करो। समाज के सार्वांगिक विकास के साथ साथ उसका नैतिक व चारित्रिक उत्थान भी नेताओं का दायित्व होता है।

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता मो. आजम खान के द्वारा सुश्री जयप्रदा के प्रति किये गये अमर्यादित व अश्लील आचरण से आज सभ्य समाज व मानवता लज्जित हुई है। पिछले २–३ दिनों में ही आजम खान के कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर आने से चुनावी वातावरण और मैला होता जा रहा है। सरकारी अधिकारियों को बंधुआ मजदूर बनाने की मानसिकता से ग्रस्त आजम खान का नेता बनना और फिर मंत्री तक बन जाना भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को आहत करता है। ऐसे दुर्व्यवहारी पर चुनाव आयोग में होने वाली आचार संहिता उल्लंघन की विचाराधीन याचिकायें प्रभावकारी होगी अथवा नहीं कहना कठिन है। क्योंकि मोहम्मद आजम खां का पूरा राजनैतिक जीवन विवादों से भरा हुआ है। उनकी बदजबानी व बदतमीजी किसी भी सभ्य नेता के लिये अशोभनीय हैं। पूर्व में जब भी वे उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री रहे तो भी इनका रौब मुख्यमंत्री से कम नहीं समझा गया। बिगड़ैल व बेलगाम आजम खान अपनी सरकारी अकड़ में मानवीय संवेदनाओं को भूल जाते थे। उनका पूर्व में भी (१६.३.२०१७) एक वीडियो वायरल हुआ उसमें जिस प्रकार अपने चुनावी जीत का प्रमाण पत्र लेने (११.३.१७ की शाम) जाने पर कीचड भरें मार्ग के कारण उन्होंने वहां के रिटर्निंग अधिकारी (अभय कुमार गुप्ता) एसडीएम सदर, रामपुर को डॉट लगाते हुए यहां तक कह दिया था कि अभी तो हम मंत्री है और आपके विरुद्ध कार्यवाही कर सकते है। उन्होंने यह भी कहा कि आप तो कूड़ें के ढेर में पड़े हुए थे, रोये थे, आप इतनी जल्दी नजर बदलते हो इत्यादि।

आजम खान के विवादों की सूची बहुत लंबी है सर्वप्रथम जब ये १९९० में पहली बार मंत्री बने थे तब भी अपने अधीनस्थ अधिकारी ओंकारनाथ सिंह से गुत्थम–गुत्था हुई थी और उनको निलंबित कर दिया गया था। आजम खान के राज्य अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रति अभद्र व्यवहार से पीड़ित सचिवालय संघ २०१३ के अध्यक्ष यादवेंद्र सिंह सरकार को अवगत कराते रहें। नवम्बर २०१३ के ही एक समाचार के अनुसार प्रदेश के दो प्रमुख सचिव व एक विशेष सचिव सहित कुछ निजी कर्मचारियों ने तो इनके साथ काम करने को ही मना कर दिया था। भारत माता को डायन कहने वाले आजम खान हिन्दू अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ दुव्यवहार करते हुए कभी किसी को मुर्गा बनाते है तो किसी को कान पकड़ कर बैठक लगवाते है और चांटा मारना व डांट–डपट करना तो उनके लिये सामान्य बात होती थी। अधिक मूड खराब होने पर उसके लिये जिम्मेदार व्यक्ति को निलंबित करना आजम खान के बिगड़े स्वभाव को दर्शाता है। एक बार १८ दिसम्बर २०१२ को हावड़ा मेल से आजम खान अपने स्टाफ के साथ लखनऊ से रामपुर जा रहे थे तो रामपुर के निकट ए. सी. स्लीपर कोच के अटेंडेंट निर्मल यादव को बिस्तर गंदे होने पर डांट लगाई परंतु अटेंडेंट के यह कहने पर की उसके पास ऐसे ही बिस्तर है, आजम खान ने उसे थप्पड़ जड़ दिया और कान पकडवा कर ५० बैठकें लगवायी। इतना ही नही मंत्री के समर्थकों ने बाकी अटेंडेंटो को मुर्गा बनाया उनकी पिटाई की व माफी मांगने पर छोड़ा था। निर्मल यादव इस घटना से इतने पीड़ित हुए कि वे कुछ दिन छुट्टी लेकर कोलकत्ता अपने घर पर रहें थे। इन पीड़ित रेल स्टाफ ने जीआरपी थाने अमृतसर में २० दिसम्बर २०१२ को रिपोर्ट भी लिखवायी थी।

वैसे उनकी मानसिकता को समझने के लिए ८ फरवरी २०१२ को गोरखपुर में हुई एक चुनावी सभा में मुसलमानों को भड़काते हुए उन्होंने जो कहा था वह पर्याप्त है कि बदलाव लाओ और सपा सरकार के गुजरे उस कार्यकाल (२००२ से २००७) को याद करो जब थाने के लोग दाढ़ी पर हाथ धरने से डरते थे। (दैनिक जागरण ०८.०२.२०१२)। आजम खान प्रदेश में दादागिरी दिखाते हुए मुसलमानों को भी दबंग बने रहने के लिए कहते थे। वे अधिकारियों के लिए उनसे कहते थे कि अधिकारी न आपके

शेष पृष्ठ 10 पर

जिसने तेरह वर्ष खपाये अपने कालेपानी पर!
सारे तीर्थ न्यौछावर उसकी पावन कुर्बानी पर!!

जो चीनी हमले के दिन भी, गद्दारी के गायक थे,
माओ के बिल्ले लटकाने, वाले खलनायक थे।
जिनके अपराधों की गणना, किए जमाने बैठे हैं,
वो सावरकर के छलों का, मोल लगाने बैठे हैं।।
वे क्या जाने सावरकर, या अंडमान के पानी को,
जो गाली देते रहते हैं, झाँसी वाली रानी को।
ये ए. सी. कमरों में बैठे, मात्र जुगाली करते हैं,
कॉफी–सिगरेट के धुँए में, हर्फ सवाली करते हैं।।
कुछ दिन इन सबको भी, भेजो अंडमान काला पानी,
दो दिन में ही याद करेंगे, ये अपनी दादी–नानी।
कोल्हू के चक्कर से पूछो, उसके पैरों के छाले,
जिसने आजादी के सपने, काल कोठरी में पाले।।
जिसने तेरह वर्ष खपाये, अपने काले पानी पर,
सारे तीर्थ न्यौछावर, उसकी पावन कुर्बानी पर।
जो सूरज की प्रथम किरण पर, कोल्हू में जुत जाते थे,
वो आजादी के सूरज को, अपना रक्त चढ़ाते थे।।
उनका चित्र भले मत टाँगो, संसद रूपी मीने में,
सावरकर का चित्र टंगा है, हर देशभक्त के सीने में।
जिस माँ ने दो–दो बेटों को, भेजा हो काला पानी,
उसने गाथा दोहरा दी है, पन्ना की राजस्थानी।।
जिनके बीच काल कोठरी ने, खींची काली रेखा,
सात वर्ष के बाद भाई ने, दूजे भाई को देखा।
बाँहे दोनों की मिलने को, उस पल अकुलाई होंगी,
दोनों ने बचपन की यादें, क्षण भर दोहराई होंगी।
मिलते समय जेल पहरी के, पहरे बड़े लगे होंगे,
पहली बार उन्हे बेड़ी के, बन्धन कड़े लगे होंगे।
मन ही मन दोनों ने शायद, बातें बहुत करी होंगी,
दोनों की आँखों से गंगा–जमुना, साथ झरी होंगी।।
सहसा पैरों में लोहे की बेड़ी खनक गई होगी,
और बिछुड़ते समय भाई की, आँखें छलक गई होंगी।
फिर शायद आँसू पोंछे हों, दिल में जोश भरा होगा,
मुट्ठी करकर आजादी का, दृढ़ संकल्प किया होगा।।
लेकिन जिस दिन ये बेहूदी, घटना यहाँ घटी होगी,
उस दिन स्वर्गलोक में उनकी रातें, नहीं कटी होंगी।
सेल्युलर की काल कोठरी, सहसा जाग गई होगी,
सागर की बर्फीली लहरें, भीषण आग हुई होंगी।।
काल कोठरी वाली लौह, सलाखें गर्माई होंगी,
फांसी के तख्ते पर लटकी, रस्सी चिल्लाई होगी।
सावरकर की आँखों से तब, खारा जल छलका होगा,
कोल्हू से उस समय तेल की जगह लहू टपका होगा।
कायर राजनीति ने लेकिन, वो लहू भी चाट लिया,
वोटों की खातिर संसद ने, युगपुरुषों को बाँट लिया।
हमने केवल कुछ पुतलों को, चौराहों पर खड़ा किया,
और कुछ लोगों को केवल, तस्वीरों में जड़ा दिया।।
हमें आजादी मिलते ही सब, अपने मद में फूल गए,
शास्त्री–वीर सुभाष–विनायक–सावरकर को भूल गए।
क्योंकि इनके नामों में कुछ, वोट नहीं मिल सकते थे,
इनको याद दिलाने से , सिंहासन हिल सकते थे।।
हमने मोल नहीं पहचाना, राजगुरु की फाँसी का,
हमन ऋण नहीं चुकाया, अब तक रानी झाँसी का।
बिस्मिल जी की बहन मर गई, जूठे कप धोते–धोते,
और यहाँ दुर्गा भाभी ने, दिन काटे रोते–रोते।।
अब भी समय नहीं बीता है, भूलों पर पछताने का,
भारत माता के मन्दिर में, अपने शीश झुकाने का।
जिस दिन बलिदानी चरणों पर, अपने ताज धरोगे तुम,
उस दिन सौ करोड़ लोगों के, दिल पर राज करोगे तुम।।

विनीत चौहान

महान देशभक्त वीर सावरकर

साभार-शुद्धि समाचार

देशभक्त क्रान्तिकारियों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध १८५७ में जो सशस्त्र क्रान्ति की गई थी उसे अंग्रेजों ने गदर बता कर देशभक्त भारतीयों को भ्रमित करने की जो कुचेष्टा की थी उसी भ्रम को तोड़ने के लिए वीर विनायक दामोदर सावरकर ने ब्रिटेन में बैठकर '१८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम' नाम का क्रान्तिग्रन्थ लिखा जिससे डरे हुए अंग्रेजों ने छपने से पहले ही उस पर प्रतिबन्ध लगा दियां था। वीर सावरकर ने यह ग्रन्थ १९०७ में लिखा था। इसका अंग्रेजी अनुवाद हालैंड में छपा, वहाँ से फ्रांस और भारत में भेजा गया। क्रान्तिकारियों ने इसे गीता की तरह पढ़ा।

इसका दूसरा संस्करण भीखाजी कामा, लाला हरदयाल आदि क्रान्तिवीरों ने छपवाया। तीसरा संस्करण सरदार भगत सिंह ने गुप्त रूप से छपवाया। यह ग्रन्थ इतना लोकप्रिय था कि इसकी एक–एक प्रति उस समय तीन–तीन सौ रुपये में बिकी। वीर सावरकर ने अपनी देशभक्ति, धैर्य, अदम्य साहस, त्याग, उच्चतम मनोबल से यह सिद्ध कर दिया कि अपनी मातृभूमि–पितृभूमि और पुण्य–भूमि की स्वतन्त्रता के लिए पत्नी–पुत्र, परिवार का सुख, मान–सम्मान, बड़ा पद, नौकरी और निजी सुखों को हँसते–हँसते त्याग किया जा सकता है। अग्निपथ पर आगे बढ़ने वाले महान देशभक्त वीर सावरकर को पहले अंग्रेजी सरकार ने, फिर नेहरू की कांग्रेस सरकार ने जेलों में बन्द करके जो कठोरतम दुःख दिए, यह वीर आखिरी सांस तक उन दुःखों से विचलित नहीं हुआ।

महाराष्ट्र में नासिक जिले के भगूर नामक ग्राम में दामोदर सावरकर और राधाबाई के घर २८ मई १८८३ में वीर विनायक दामोदर सावरकर का जन्म हुआ। १९०१में जब वह मैट्रिक में पढ़ रहे थे तो २२ जनवरी, १९०१ में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की मृत्यु होने पर भारतवर्ष में होने वाली शोक सभाओं का विरोध करते हुए उन्होंने कहा था कि शत्रु देश की रानी का शोक हम क्यों मनाएं? २२ अगस्त, १९०६ में सबसे पहले वीर सावरकर ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई थी। उस कार्यक्रम की अध्यक्षता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने की थी। परिणामतः उन्हें पूना कॉलेज से निकाल दिया और दस रुपये का जुर्माना लगाया गया। कॉलेज अधिकारियों की लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' के माध्यम से निन्दा की थी। फिर बम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. पास किया। एडवर्ड के राज्यारोहण में भारत में होने वाले उत्सवों का विरोध करते हुए कहा था कि दासता का उत्सव क्यों मना रहे हो? ९ जून, १९०६ को छात्रवृत्ति लेकर बैरिस्टरी का अध्ययन करने ब्रिटेन में समुद्र मार्ग से गए।

बन्दी जीवन–१३ मार्च, १९१० को लन्दन में विक्टोरिया स्टेशन पर वीर सावरकर को बन्दी बना लिया गया। उनके बड़े भाई गणेश सावरकर को १९०८ में देशभक्ति की कविता लिखने के कारण ९ जून १९०९ को आजीवन कारावास की सजा देकर कालापानी भेजा गया। छोटे भाई नारायण सावरकर को क्रान्तिकारियों का साथी बताकर जेल में बन्द कर दिया। जब इस घटना का वीर सावरकर को पता लगा तब गर्व से बोले "इससे बड़ी गौरव की क्या बात होगी कि हम तीनों भाई भारत माता की आजादी के लिए तत्पर हैं।"

समुद्र तरणम्–१ जुलाई, १९१० को ब्रिटेन से भारत लाने के लिए वीर सावरकर को समुद्री जहाज से कठोर पहरे के बीच अंग्रेज पुलिस लेकर चल पड़ी। ८ जुलाई १९१० को वीर सावरकर स्वतन्त्र भारत की जय बोलकर समुद्र में कूद पड़े। अंग्रेजों ने खूब गोलियाँ चलाईं पर निर्भय सावरकर फ्रांस की सीमा पर पहुँच गए। फ्रांस की भूमि से सावरकर को गिरफ्तार किया तो इसका विरोध हुआ तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में केस चला पर फ्रांस और ब्रिटेन की मिलीभगत के कारण उनको न्याय नहीं मिला। ३० जनवरी, १९११ में वीर जी को दो आजन्म कारावास की सजा सुनाई तब वे हँस कर बोले– चलो ईसाई सत्ता ने हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म सिद्धान्त को मान लिया।

काला पानी की सजा– देशभक्त क्रान्तिकारियों को काले पानी की सजा सब से भयानक मानी जाती थी क्योंकि वहाँ से जीवित लौटने की आशा नहीं रहती थी। यमलोक जैसा भयानक सैल्यूलर जेल में ७ खंड थे। दूसरी मंजिल की २३४ नं. कोठरी में सोने और खड़े होने पर दीवार छू जाती थी। वीर सावरकर को नारियल की रस्सी बनाने और ३० पौंड तेल निकालने के लिए बैल की तरह कोल्हू में जोता जाता था। इतना शारीरिक कष्ट भोगने के बाद भी रात को दीवारोंपर कविता लिखते, याद करते और मिटा देते। ऐसा कष्टसहिष्णु और साहित्यकार कैदी इस संसार में वीर सावरकर के अलावा न कोई हुआ, न शायद होगा। १३ मार्च, १९१० से लेकर २७ वर्षों से अधिक (संसार में संविधान राजनीतिक बन्दी) समय तक

VINAYAK DAMODAR SAVARKAR
(28 May 1883 - 26 Feb 1966)

विभिन्न जेलों में असामान्य पीड़ा भोगकर १० मई, १९३७ में उच्च मनोबल, ज्ञान और शक्ति से भरपूर इच्छाशक्ति के धनी वीर सावरकर अंग्रेजी जेल से ऐसे बाहर निकले जैसे लम्बी रात का अंधेरा चीर कर सूर्य बाहर आ रहा हो। १८५७ की क्रान्ति भी १० मई को ही शुरू हुई थी। वीर सावरकर से अंग्रेजी सत्ता इतनी भयभीत थी कि अंडमान से रत्नागिरि क्षेत्र से बाहर नहीं जाने दिया। रत्नागिरि जेल में वीर जी १३ साल तक रहे और साहित्य रचना, शुद्धि आन्दोलन, अस्पृश्यता–निवारण, हिन्दी भाषा शुद्धि कार्य, संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा आदि अनेकों कार्य किए।हिन्दी– हिन्दू–हिन्दुस्थान –वीर सावरकर का सारा जीवन हिन्दुत्व को समर्पित था। अपनी पुस्तक 'हिन्दुत्व' में हिन्दू कौन है? इसकी परिभाषा में यह श्लोक लिखा था–

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्तायस्य
भारतभूमिका!
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै
हिन्दुरिस्मृतः!!

अर्थात भारत भूमि के तीनों ओर के सिन्धुओं (समुद्रों) से लेकर हिमालय के शिखर से जहाँ से सिन्धु नदी निकलती है वहाँ तक की भूमि जिसकी पितृ (पूर्वजों) भूमि है यानी जिनके पूर्वज भी इसी भूमि में पैदा हुए और जिसकी पुण्य भूमि यानी तीर्थ स्थान इसी भूमि में है, वही शेष पृष्ठ 10 पर

सावरकर अद्वितीय थे...

❖ आप ऐसे प्रथम राजनैतिक बन्दी थे जिन्हें दो आजीवन कारावास (५० वर्ष) की सजा एक साथ दी गई पर ये मृत्युंजयी होकर निकले।

❖ आप ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिनकी स्नातक डिग्री भी राजनैतिक कारण से बम्बई विश्वविद्यालय ने निरस्त कर दी।

❖ आप विश्व.के ऐसे प्रथम एवं अकेले कवि हुए हैं जिन्होंने बिना कागज़ कलम के जेल की दीवारों पर पत्थर या कांटे से लिख–लिख कर महाकाव्यों की रचना की एवं जेल से छूटने वाले कैदियों को पद्य याद करा–करा कर उनका प्रकाशन भारत में करवाया। ऐसी अद्भुत रचना एवं योजकर्ता और कहां मिलेगी?

❖ आप विश्व के ऐसे अकेले साहसी व्यक्ति थे जिन्होंने स्वयं–एकान्त कोठरी' में बन्द रहते हुए भी स्वधर्म पर आघात होते हुए देखकर अण्डमान जैसी दुर्दान्त जेल में हिन्दुओं पर अत्याचार से किया जाने वाला धर्मान्तरण न केवल भविष्य के लिये रुकवाया बल्कि पिछले १५–२० वर्ष से भी धर्मान्तरित व्यक्तियों को स्वधर्म में लैटाया एवं सहधर्मियों से स्वीकृति भी दिलवाई, साथ–साथ खान–पान भी चालू कराया। उस कालखण्ड में ऐसी घटना खोजने से भी नहीं मिल सकती।

❖ अण्डमान द्वीप को हिन्दू संस्कृति एवं आज के भारतीय प्रशासन के साथ बने रहने का प्रथम श्रेय आपको ही जाएगा। यदि –परावर्तन' द्वारा सावरकर जी इस द्वीप को हिन्दू–बहुल नहीं बनाये रखते तो विभाजन की मांग के समय इसकी भी स्थिति भिन्न होती।

❖ आप पहले राजनेता थे जिन्होंने यह स्पष्ट उद्घोष किया कि 'हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व' है और धर्मान्तरण ही राष्ट्रांतरण' है।

❖ आप ही पहले नेता थे जिन्होंने यह उद्घोष किया कि हिन्दू स्वतः एक राष्ट्र है और उन्हें सूर्य रश्मियों के तले अपना स्थान बनाने का प्रकृति प्रदत्त अधिकार है।

❖ आप ही एकमात्र नेता थे जिन्होंने स्पष्ट रूप से 'राजनीति के हिन्दूकरण' और 'हिन्दुओं के सैनिकीकरण' का मंत्र दिया।

सावरकर के सपनों का भारत

साभार-जनज्ञान

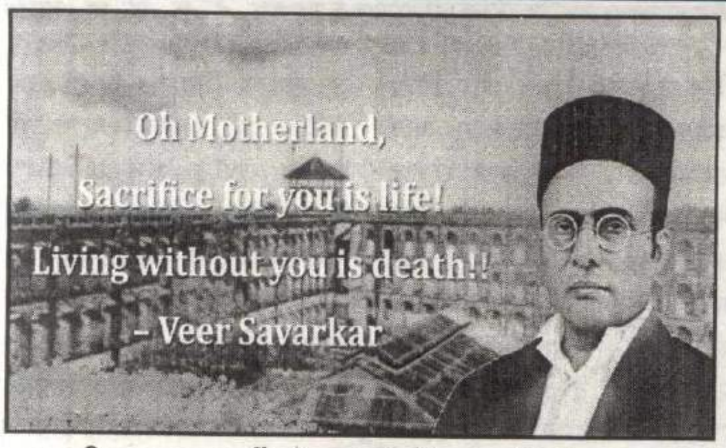

उनकी कल्पना उन्हीं के शब्दों में

हिन्दू हृदय सम्राट स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर हमारे मध्य नहीं हैं। वे दीपक बनकर जले थे। अब नक्षत्र बन चुके हैं। हिन्दू राष्ट्रवाद के उद्‌गाता सावरकर के महान त्याग और तपस्या के समक्ष नागराज हिमालय भी नतमस्तक था, जिनकी प्रबल वीरता को देखकर पौरुष और पराक्रम को भी आश्चर्य होता रहा, वह विश्व के अद्वितीय क्रान्तिकारी, महान दिशानायक एवं राष्ट्र निर्माता (२६ फरवरी १६६६ को) अपनी नश्वर काया की स्वेच्छया समर्पण कर अपनी आकांक्षा और अपने सपनों की विरासत देश के जन-जन को सौंप गए थे। मौत की छाया में पला यह महापुरुष मृत्युंजय बन चुका है। उनकी पार्थिव प्रतिमा हमारे मध्य नहीं है किन्तु उनके शाश्वत विचार आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं। प्रस्तुत है वीर सावरकर की भारत के सम्बन्ध में कल्पना उन्हीं के शब्दों में....

''मेरे सपनों का भारत एक ऐसा लोकतन्त्रीय राज्य है, जिसके सभी धर्मों और मत–मतान्तरों के अनुयायियों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार किया जाएगा। किसी को दूसरे पर आधिपत्य जमाने का अवसर न रहेगा। **जब तक कोई व्यक्ति हिन्दुओं को इस पुण्यभूमि तथा मातृभूमि हिन्दुस्तान को एक राज्य मानकर, इसके प्रति अपने दायित्वों का निष्ठा सहित पालन करेगा, जो आसिन्धु-सिन्धु पर्यन्त विस्तीर्ण हैं, तब तक उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे।** हिन्दू जातिविहीन और संगठित आधुनिक राष्ट्र का रूप ग्रहण करेंगे। **विज्ञान और औद्योगिकी को बढ़ावा मिलेगा, जिससे सभी भूमि राज्य की होगी। और कोई भी जमींदार न होगा। सभी महत्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होगा तथा भारत खाद्यान्न, वस्त्र और प्रतिरक्षा की दृष्टि से पूर्णतः आत्मनिर्भर होगा। मेरे सपनों के भारत का वसुधैव कुटुम्बकम् के महान आदर्श में विश्वास होगा। सैनिक दृष्टि से सबल अखण्ड हिन्दुस्तान की विदेश नीति होगी, तटस्थता और शान्ति की। शक्तिशाली और अखण्ड हिन्दुस्तान की विश्व में स्थाई शान्ति और समृद्धि की दिशा में प्रभावी योगदान दे सकता है।**''

हिन्दू सहिष्णु है

''सावधान! हिन्दुओं के बारे में यह कहा जाता है कि हिन्दू बड़े सहिष्णु हैं। परन्तु स्मरण रखिए, यह भावना दूसरों ने फैलाई है। **हिन्दुओं का वास्तविक इतिहास यदि आप देखेंगे तो आपको विदित होगा कि हिन्दू सहिष्णु है और असहिष्णु भी है।** न्याय के साथ हिन्दुओं ने सदैव सहिष्णुता का आदर किया है और अन्याय के प्रति सहिष्णुता बरती है। अतः दूसरों के धोखे में हमें नहीं आना चाहिए। सहिष्णुता मात्र को ही सद्‌गुण समझकर अपने बड़प्पन की रक्षा में धर्म तथा राष्ट्र का घात हमें सहन नहीं करना चाहिए। **हिन्दू सहिष्णु हैं, यह भावना फैलाकर और हिन्दुओं को औषधि शिक्षा, आर्थिक सहायता और भोजन देकर उन्हें बड़ी योजना सहित धर्मान्तरित किया जाता रहा है।** इस अवस्था में हिन्दू महासभा व आर्यसमाज सरीखी हिन्दू संस्थाओं को यह घोषित करना चाहिए कि आगामी कुछ ही वर्षों में हम भारत को इस भयानक संकट से मुक्त करेंगे।''

धर्म की परिभाषा

''क्या धर्म अर्थात् पारमार्थिक चर्चा द्वैत–अद्वैत का वाद–विवाद या चेतन–अचेतन की खोज है अथवा केवल भावना है जो व्यक्ति शून्य हो? नहीं। **विशेष रूप से हमारा धर्म महान होने से हम धर्म को ही राष्ट्र धर्म कहते हैं। हमारा इतिहास ही धर्म है। इतना ही नहीं अपितु हमारा दैनिक व्यवहार जो इतिहास समाज और राष्ट्र को पुष्ट करता है वही हमारा धर्म है।** धर्म की यह परिभाषा विधर्मी स्टालिन जैसे कम्युनिस्टों को भी माननी पड़ी थी। अमरीका का राष्ट्रपति बाइबिल हाथ में लिए बिना राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण नहीं कर सकता, इंग्लैंड का सम्राट यदि प्रोटेस्टैन्ट न हो तो उसे राज्य के पद से त्याग पत्र देना पड़ता है। **यदि छोटे-से-छोटे पाश्चात्य देश में हम जाएँ हमें यही दिखाई देगा कि वह राष्ट्र किसी न किसी धर्म का अनुयायी होगा।** हम हिन्दू हैं और हमने दुनिया देखी है। देश, इतिहास और व्यवहार के विशुद्ध न्यायपूर्ण बरताव को ही धर्म कहते हैं। इसलिए धर्म में महान शक्ति होती है। हम, हमारा देश, इतिहास और व्यवहार हिन्दुस्तान के वैभव को बढ़ाने वाला है। इस प्रकार व्यक्तिगत और सामाजिक भावनाओं में व्याप्त प्रेरणा को ही हम धर्म कहते हैं।''

भारतभूमि कदापि दिवालिया न होगी

''स्वतन्त्रता के अनेक वर्ष उपरान्त भी हम लोगों को निराश, हताश विक्षुब्ध और नैतिकता से गिरता हुआ देख रहे हैं। आज जनसाधारण जो पेट की रोटी और अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं, बड़ी योजनाओं ने आपको तनिक भी प्रभावित नहीं किया है। **किन्तु इतने पर भी एक क्षण के लिए यह सोचना कि यह तो देश खण्डित हो जाएगा, पागलपन ही होगा। एक ऐसा देश जिसने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, शालिवाहन और शिवाजी जैसे महान राजनीतिज्ञों को गोदी में खिलाया है, वह कभी भी राजनीतिक दृष्टि से दिवालिया नहीं हो सकता है।** सहस्रों वर्षों के इतिहास में हिन्दुस्तान पर जब–जब संकट के घन लहराए हैं तब ही किसी ने किसी महापुरुष ने उसका नेतृत्व कर राष्ट्र को सम्बल दिया है। जैसा अतीत में हुआ है, भविष्य में भी ऐसे लोग होते रहेंगे जो देश का दिशा निर्देशन करेंगे, इसकी सेवा के लिए जिएँगे और मरेंगे।''

सैनिक महाविद्यालय हो नगर-नगर में

''आने वाले दस वर्षों में 'सीनेट' बनाने वाला एक भी युवक पैदा न हुआ तो चलेगा। पुनः पुनः साहित्य सम्मेलन न हुए तो हानि नहीं, परन्तु दस–दस सहस्र युवक सैनिकों की कन्धों पर नई राइफलें रखकर राष्ट्र के मार्गों में; शिविर में टप–टप करते हुए संचलन करती दृष्टिगोचर होनी चाहिए। **कम से कम ग्रन्थालयों की संख्या के बराबर नगर-नगर में सैनिक महाविद्यालय भी व्यस्त अवस्था में दिखाई देने चाहिए।** फिर कभी–कभी उन्होंने एक दो उपन्यास अथवा प्रेम गीत पढ़ा अथवा 'सीनैट' बनाया तो कोई बुराई नहीं।'' ''नेपोलियन भी रणभूमि में मनोरंजन के लिए सीटी बजा दिया करता था। दिल्ली के बादशाह का मान–मर्दन करक लौटने के पश्चात मस्तानी के अन्तःपुर में प्रथम बाजीराव पेशवा यदा–कदा एकाध पान खा लेते थे। परन्तु जीवन पर्यन्त केवल वृक्ष के पत्ते ही चूसने वाला और तमाशों में खड़कने वाले तबले सुनने वाले द्वितीय बाजीराव के ब्रह्मावर्त का स्वरूप राष्ट्र को प्राप्त हो यह मेरी आँखों से नहीं देखा जाएगा।''

अकेले रहो तो भी

''गत ५० वर्षों में जिन्होंने मुझको नेता मानकर अपमान और दरिद्रता को सहकर भी हिन्दू समाज को बलवान बनाने हेतु कष्ट उठाए उनको मैं कुछ भी नहीं दे सका। अपना सब कुछ बलिदान करके भी मेरे साथ रहे। आपकी दृढ़ता देखकर मैं प्रसन्न हूँ। **इस हिन्दू ध्वज को कंधे पर रखकर आगे बढ़ते रहो। मैं जानता हूँ कि यह पथ आसान नहीं है। लेकिन मेरे मन में आशा है।** आप लोग भी इसी विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहिए। **अन्तिम विजय हमारी होगी।** प्रत्येक कार्यकर्ता अपने ध्येय पर अटल रहे। मैं चाहता हूँ कि आप में से प्रत्येक केवल इस बात का चिन्तन करता रहे कि मैं ''अकेला भी रहूँगा तो भी हिन्दू राष्ट्र हेतु सक्रिय और सचेष्ट रहूँगा।''

वरं जनहितं ध्येयम्, केवला न जनस्तुतिः

''सामान्यतः जनता की स्तुति और जनता का हित इन दोनों को एक साध्य करने वाले मनुष्यों का जीवन सफल माना जाता है। लेकिन मैं ध्येय वाक्त हूँ वरं जनहितं ध्येयम् केवला न स्तुतिः (अर्थात केवल जन स्तुति करना मैं उचित नहीं समझता। मेरा उद्देश्य है कि जन–हित का साधन करना मैं जानता हूँ कि क्रोधी शंकर भी स्तुति के वश में हो जाते हैं। फिर जनसाधारण की क्या स्थिति होती होगी यह समझना कोई कठिन बात नहीं है। फिर भी मेरी यह दृढ़ धारणा है कि **जनता की स्तुति करने की अपेक्षा जनता का हित ही अधिक महत्त्व की बात है। प्रत्येक देशभक्त को चाहिए कि इस सत्य को सर्वप्रथम पहचाने।''**

शेष पृष्ठ 10 पर

हिन्दू राष्ट्र के उत्तराधिकारी बनें

इस जगत में यदि हम हिन्दू राष्ट्र के नाते स्वाभिमान का जीवन जीना चाहते हैं तो उसका हमें पूरा अधिकार है और वह राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र के ध्वज के नीचे ही स्थापित होना चाहिए। इस पीढ़ी में नही तो अगली पीढ़ी में मेरी यह महत्वाकाँक्षा अवश्य सही सिद्ध होगी। मेरी महत्वाकाँक्षा गलत सिद्ध हुई तो पागल कहलाऊंगा मैं और यदि महत्वाकाँक्षा सही सिद्ध हुई तो भविष्यद्रष्टा कहलाऊंगा मैं।

मेरा यह उत्तराधिकार मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ। वि.द. सावरकर

प्रायः प्रति वर्ष मई माह के २८ वें दिवस पर राष्ट्र चेतना के धधकते अंगारे, हिन्दू राष्ट्र के प्रचंड परंतु सर्वाधिक प्रताड़ित योद्धा स्वातंत्र्यवीर विनायक दमोदर सावरकर जी को उनके जन्मोत्सव पर अधिकांश राष्ट्रवादी समाज स्मरण करके उनसे प्रेरित होता आ रहा है। प्रतिवर्ष आने वाली यह तिथि (२८ मई) हिन्दुत्वनिष्ठ समाज को एकजुट व संगठित करके संगोष्ठी व वार्ताओं के विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा वीर सावरकर जी के अथाह राष्ट्रप्रेम से आने वाली पीढ़ी को भी अवगत कराती रही है। इस वर्ष भी हम सब उनके १३६वें जन्मोत्सव पर पुनः पूर्व की भांति होने वाले कार्यक्रमों में सम्मलित होंगे और सामूहिक रुप से हिंदुत्ववादी विचारधाराओं व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित होंगे। निसंदेह इतिहास के अत्यंत प्रेरणादायी महापुरुष के जीवन पर हम सभी उनके राष्ट्र व हिंदुत्व के प्रति अदम्य साहस, समर्पण और अभूतपूर्व दूरदर्शिता के प्रसंगों की चर्चाऐं करके अपने आप गौरवान्वित हो कर संतुष्ट हो जाते है। परंतु क्या हम उस वीर योद्धा पर मातृभूमि की रक्षा के लिये दशकों तक हुए अमानवीय अत्याचारों व यातनाओं की पीड़ाओं का एक पल के लिये भी अभास कर पाते है? क्या वर्ष में एक बार वीर सावरकर जयंती के आयोजन मात्र से हम उन करोड़ों छात्र–छात्राओं व युवाओं को यह संदेश देने में समर्थ है कि वीर सावरकर जी के अंतःस्थल में एक ही ध्येय बसा था। बस तेरे लिए जीये माँ और तेरे लिये मरे हम, कितनी ही विपदायें–बाधायें आई, पर नही डरे हम। जिसकी रग रग में राष्ट्रप्रेम का संचार कभी थमा नही उस महान योद्धा का अनुसरण जब तक हम नही करेंगे अपने धर्म और राष्ट्र को सुरक्षित कैसे रख पायेंगे?

अखंड भारत - हिन्दू राष्ट्र

उन्होंने अपने छात्र जीवन में ही नासिक में रहते हुए कुछ मित्रो के साथ मिलकर राष्ट्र भक्त समूह नाम की एक गुप्त संस्था बनाई थी। उच्च अध्ययन के लिए ब्रिटेन जाने के पश्चात उन्होंने सार्वजनिक आंदोलन करने के लिए फ्री इंडिया सोसाइटी का भी गठन किया था। उनके अदम्य साहस की अनेक घटनाओं में से एक प्रमुख घटना ८ जुलाई १९१० की है जब उनको बंदी बना कर इंग्लैंड से जलपोत द्वारा भारत भेजा जा रहा था तो रास्ते में मार्सेलिस पोर्ट (फ्रांस) में जहाज के रुकने पर सावरकर जी ने शौचालय के पोर्टहोल से समुद्र में अद्भुत छलांग लगा कर भी ब्रिटिश बंधन से बचने में असफल रहें। परंतु इस अभूतपूर्व घटना ने वीर सावरकर के अदम्य साहस व शौर्य का परिचय करा के पूरी दुनिया को ही चकित कर दिया था। उन विपरीत संघर्षरत अवधि में भी उनकी दृढ़ता और निर्भयता का स्पष्ट संकेत जलपोत में लिखी उनकी पंक्तियों में मिलता मैं अनादि हूं, अनन्त हूं, अतः विश्व में कौन ऐसा शत्रु है जो मुझे मार सके?

उनका ध्येय वाक्य था कि स्वतंत्रा साध्य और शस्त्र क्रांति साधन है। इसलिए उनका मत था कि हिंदुओं का सैनिकीकरण होना चाहिये, क्योंकि १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के बाद अंग्रेजो ने हिन्दू सैनिको को भारतीय राजनीति से दूर रखने की नीति अपनाई है, इसलिए हिन्दू सैनिकों में राजनीति करना हमारा प्रथम कर्तव्य है, तभी हम स्वतंत्रता का युद्ध जीत सकेंगे। द्वितीय विश्वयुद्ध (१९३९) के अवसर पर उन्होंने अधिक से अधिक हिन्दुओं को सेनाओं में भेज कर युद्ध कौशल में निपुण होने का परामर्श दिया जबकि कुछ नेताओं ने इसका विरोध किया कि यह तो ब्रिटिश सेना की सहायता होगी। परंतु सावरकर जी का स्पष्ट मत था कि ऐसा अवसर पिछले ५० वर्षो में पहली बार आया है और संभवतः आने वाले ५० वर्षो में भी पुनः न मिलें तो इसका अधिकतम लाभ उठाना चाहिये। वे अपने तर्क को समझाते हुए कहते थे कि मै एक प्रश्न आपसे पूछता हूं कि यदि कोई यह कहता है कि यह हिंसाचार है या साम्राज्यवादी शक्ति की सहायता करना है तो फिर हमें अपने हाथ में आई सैनिक शक्ति बढ़ाने का यह सुअवसर छोड़ देना चाहिये। उनका मानना था कि अंग्रेजी राज्य को समाप्त करने के लिए भारतीय युवकों को हाथों में शस्त्र लेकर मरने मारने को तैयार हो जाना चाहिये तभी स्वाधीनता मिलेगी। वे हिन्दू युवको का आह्वान करते थे कि सेना में अधिक से अधिक भर्ती हो और सैन्य विद्या सीखें। उनकी इसी दूरदर्शिता के परिणाम स्वरुप सेनाओं में स्वतंत्रता के पश्चात भी हिन्दुओं की बहुलता है। गाँधीजी के अहिंसा के सिद्धांत का उन्होंने सदा विरोध किया। उनका मत था कि जब बहन–बेटियों की रक्षा अहिंसा से नही कर सकते तो स्वाधीनता कैसे मिलेगी?. आततांई, अत्याचारी व आक्रमणकारी को मार डालना हिंसा न होकर अहिंसा व सदाचार ही है। अहिंसा की बात करने वाले मोहनदास करमचंद गांधी को उनका संदेश था कि ब्रिटिश शासन को अहिंसा से ध्वस्त करने की कल्पना किसी बड़े किले को बारुद की जगह फूंक से उड़ा देने के समान हास्यास्पद है। वीर सावरकर जी ने ही नेताजी सुभाषचंद्र बोस को सशस्त्र क्रांति के लिए विदेश जाकर एक फौज बनाकर ब्रिटिश राज्य को भारत से उखाड़ने के लिये प्रेरित किया था। वीर सावरकर सुभाष बाबू के अनेक क्रांतिकारी कार्यो से परिचित थे। उन दिनों ब्रिटेन विश्व युद्ध मे फंसा हुआ था अतः उन्होंने सुभाष बाबू को इस स्थिति का लाभ उठाते हुए बड़े निश्चय व निर्णय के साथ उन्हें भारत में छोटे छोटे क्रांतिकारी कार्यो में फंसने से बच कर एक बड़े लक्ष्य को साधने के लिए रासबिहारी बोस के पास जापान भेजा। यही नही अनेक अभावों के उपरांत भी वीर सावरकर ने सुभाष जी की विदेश में सारी व्यवस्था भी की थी।

वे मुसलमानों की विशेष मांगो व अधिकारों के सदा विरोधी रहें। हिन्दू–मुस्लिम एकता के संदर्भ में उनका कहना था कि साथ आये तो तुम्हारे साथ न आये तो तुम्हारे बिना, किंतु यदि तुमने विरोध किया तो हिन्दू तुम्हारे विरोध का सामना करके अपनी शक्ति के बल पर स्वतंत्रता के युद्ध को आगे बढ़ाते रहेगें। उन्होंने एक बार हिन्दू महासभा क कानपुर अधिवेशन में हिन्दू–मुस्लिम एकता की भ्रामक कल्पना ग्रस्त गांधी जी के एक पत्र के कुछ अंश पढ कर सुनाये जिसमें गांधीजी ने लिखा था कि ब्रिटिश के हाथ की सभी हिंदुस्तान की सत्ता यदि उन्होंने मुस्लिम लीग के हाथों में सौप दी तो भी कांग्रेस उसका विरोध नही करेगी। इसके संदर्भ में सावरकर जी ने स्पष्ट किया कि हिन्दू हित और शुद्ध राष्ट्रीयता के साथ इतना बड़ा द्रोह और क्या हो सकता है? इसी अधिवेशन के अंत में उन्होंने एक ध्येय वाक्य दिया.. राजनीति का हिन्दुकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण कीजिये। वे अखंड भारत के विभाजन के घोर विरोधी थे। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान बन सकता है तो वह मिट भी सकता है।

वे संस्कृतनिष्ठ हिंदी के प्रबल समर्थक और उर्दू व अंग्रेजी के घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि भाषा राष्ट्रीयता का प्रमुख अंग होती है और हमारी संस्कृति, सभ्यता, इतिहास व दर्शन आदि सभी इसी भाषा में है और यह हमारे पूर्वजों की अनमोल देन है। उन्होंने जाति भेद का निरंतर विरोध किया और समस्त जातियों को एकजुट करने में सदा सक्रिय रहें। वे कहते थे कि हम कुत्ते, भैस, घोड़े, गधे जैसे पशुओं को छू सकते है, सर्प को दूध पिलाते है, प्रतिदिन चूहे का रक्त चूसने वाली बिल्ली के साथ बैठकर खाते है, तो फिर, हे हिन्दुओ! अपने ही जैसे इन मनुष्यों को, जो तेरे ही राम और देवताओं के उपासक है, अपने ही देशबंधुओं को छूने में तुम्हें किस बात की शर्म आती है। उन्होंने शुद्धिकरण और अछूतोद्धार आंदोलन भी चलाये। उनका मत था कि रामायण और महाभारत हमारे दो ग्रंथ ही हमें एकजुट करने में समर्थ है। हमारा धर्म महान है हम राष्ट्र को ही धर्म मानते है। अतः वे सभी कार्य जो राष्ट्र को पुष्ट करें वही हमारा धर्म है। धर्म ही राजनीति का पोषक होता है, धर्म शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में

परम आदरणीय श्री रामनाथ कोविंद जी

माननीय प्रधान सेनापति भारतीय सेना

एवम् महामहिम् राष्ट्रपति जी (भारत)

आदरणीय जी

निवेदन यह है कि पिछले कुछ दिनों से हमारे देश में रहकर हमारे देश के खिलाफ लगातार बोलने वालों की कुछ ज्यादा ही तादाद बढ़ गई है जिससे देश के दो शत्रु गददार देशद्रोही इस्लामिक आतंकवादियों के सबसे बड़े समर्थक है जम्मू–कश्मीर निवासी नेशनल कांफ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला वह पीडीपी की नेता महबूबा मुफ्ती जो कि लगातार देश को तोड़ने वाले देशद्रोही भाषा से भरे बयान दे रहे है यह कभी तो कहते है कि कश्मीर में अलग प्रधानमंत्री होना चाहिए तो कभी कहते है कि अगर धारा ३७० को किसी ने भी कश्मीर से हटाने की कोशिश की तो नाही कोई कश्मीरी तिरंगा हाथों में उठायेगा और नाही अपने कन्धे पर उठायेगा और तो और यही गद्दार देशद्रोही नेता अपना पाकिस्तानी प्रेम दिखाने के लिए लगातार देश की एकता ओर अखंडता को नुकसान पहुंचाने वाले बयान देते रहते है कभी यह कहते कि भारतीय सेना ने यह गलत किया तो कभी भारतीय सुरक्षा बलों पर हथियार चलाने वालो का भारतीय सेना पत्थरबाजी करने वालो का खुलेआम समर्थन करते है और कल की ही बात है महबूबा मुफ्ती ने तो यह तक कह दिया कि तुम हमे धारा ३७० हटाने की तारीख बताओ हम तुम्हें भारत से कश्मीर अलग थलग करने की भी तारीख बतायेंगे अब हम इन सभी आतंकवादियों देशद्रोही गद्दार नेताओं के देश विरोधी मानसिकता बयानों को बिल्कुल भी बर्दाश्त नही करेगे चाहे इसके लिए हमे आपके आदेश अनुसार कुछ भी करना पड़े अतः हम हिन्दू महासभाई आप से राष्ट्र हित को सर्वोपरि मानते हुए हम आप से हाथ जोड़कर करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि आप सम्पूर्ण राष्ट्र की रक्षा सुरक्षा हेतु ऐसे देशद्रोही गद्दार नेताओं को खुलेआम भारतीय सेना के हाथों मृत्युदंड देने की अनुमति भारतीय सेना के वीर सैनिकों को प्रदान करे या हम हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं को ऐसे देशद्रोही गद्दार नेताओं को खुलेआम मृत्युदंड देने की अनुमति हमे प्रदान करने की कृपा हम हिन्दू महासभा के कार्यकर्ताओं पर करे क्योंकि महान चाणक्य जी ने कहा है कि जब राष्ट्र के अन्दर रहकर ही राष्ट्र के खिलाफ कोई कोई भी जनमानस राष्ट्र की एकता और अखंडता को ललकारता है या राष्ट्र के विरुद्ध कोई भी राष्ट्र विरोधी बयान देता है या राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करता है व्यक्ति राष्ट्र का सबसे बड़ा राष्ट्र शत्रु कहलाता है उस व्यक्ति के विरुद्ध राष्ट्रद्रोह की श्रेणी का वाद दर्ज होना चाहिए और ऐसे व्यक्ति को अवश्य ही जनता के बीच में खुलआम राष्ट्र सुरक्षा के द्वारा मृत्युदंड मिलना ही चाहिए।

निवेदन

अभिषेक अग्रवाल, प्रदेश प्रवक्ता
एवं जिलाध्यक्ष जनपद मेरठ
अखिल भारत हिन्दू महासभा

शेष पृष्ठ 6 का **भड़काऊ व बिगड़ैल.....**

रिश्तेदार है और न मेरे, आप चाबुक हाथ मे रखिये वह सब सुनेंगे। (दैनिक जागरण ३१.०१.२०१३)। पिछले वर्षो के समाचार पत्र गवाह है कि इनके कार्यकाल में जितने भी छोटे–बड़े साम्प्रदायिक दगें हुए लगभग सभी में हिंदुओं का ही एकतरफा सरकारी उत्पीड़न हुआ। साथ ही दंगो के अतिरिक्त अन्य सामान्य दुर्घटनाओं में भी मुस्लिम समुदाय पर जम कर सरकारी कोष लुटाया गया। अगर रामजन्मभूमि मंदिर व प्रधानमंत्री मोदी जी पर इनके अत्यधिक कुटिल विवादास्पद बयानों का उल्लेख किया जाय तो मुझे ही साम्प्रदायिक घोषित कर दिया जायेगा।

इनकी देश भक्ति के विषय में वरिष्ठ पत्रकार श्री पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ के एक वीडियो से ज्ञात हुआ कि जब १९६५ में भारत–पाक युद्ध के समय रामपुर छावनी से सेना का युद्ध क्षेत्र में प्रस्थान हो रहा था तो इन्होंने अपने कालेज के लगभग ५० साथियों के साथ वहां रास्ते में सड़क को क्षतिग्रस्त करके बाधा पहुँचाने का दुःसाहस किया था। जब इनकी पिटाई भी हुई और इनको रामपुर छोड़ कर अलीगढ़ भागना पड़ा था। सम्भवतः इस घटना से अधिकांश देशवासी अनजान होंगे। इस कट्टरपंथी मुस्लिम नेता की तुलना औरंगजेब जैसे शासक से की जाय तो थोड़ी अतिश्योक्ति हो सकती है। लेकिन भारत माँ को डायन कहने वाला, हिन्दू कर्मचारियों व अधिकारियों को बेइज्जत करना व पीटने का दुःसाहस करने वाला, औरंगजेबी भाषा बोलने वाला व महिलाओं का अपमान करने वाला ये कट्टरपंथी मुस्लिम नेता कब तक अपने पापों से बचता रहेगा? ऐसे सिरफिरे नेता देश को अस्थिर करना चाहते है। अतः लोकतंत्र के उच्च आदर्शो को स्थापित करने के लिए मिथ्या व अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने वालों पर वैधानिक सर्जिकल स्ट्राइक हो तो इसमें कुछ भी अनुचित न होगा। राजनेताओं की राष्ट्रविरोधी, आपत्तिजनक व विवादित शब्दावली को प्रतिबंधित करके ही भारत जैसे सभ्य देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हो सकती है।

शेष पृष्ठ 8 का **सावरकर के सपनों का........**

किसान और मजदूर

"किसान और श्रमिक वर्ग हमारी शक्ति का, राष्ट्रीय सम्पत्ति का तथा हमारे राष्ट्रीय स्वास्थ्य का आधार है। कारण यह है कि देश को निरोगिता और धन प्रदान करने वाले वर्ग हैं किसान और श्रमिक। उनके बल पर ही सेना में युवकों की भरती होती है। ग्रामों की स्थिति इसलिए सर्वप्रथम सुधारनी होगी। उन्हें जीवनोपयोगी वस्तुएँ दिलाने के लिए समुचित साधन जुटाने होंगे। **कृषक और श्रमिक आधुनिक सुविधाओं का लाभ तभी उठा सकते हैं, जब उनकी आर्थिक क्षमता कायम रहेगी।** इसी हेतु राष्ट्रीय सम्पत्ति में उनका हिस्सा आवश्यक मात्रा में कायम करने की व्यवस्था करनी ही होगी। साथ ही **किसानों और मजदूरों को भी यह समझना होगा कि वे राष्ट्र के ही अंग-प्रत्यंग हैं। अर्थात् कर्तव्य और उत्तरदायित्व का बोझ उन्हें भी उठाना होगा।"**

शेष पृष्ठ 7 का **महान देशभक्त वीर........**

हिन्दू होता है। धर्मान्तरण–राष्ट्रान्तरण–वीर सावरकर कहते थे कि यदि कोई हिन्दू धर्म बदलकर मुस्लिम या ईसाई बनेगा तो उसकी तीर्थ भूमि दूसरे देश हो जाएँगे। उसकी धार्मिक आस्था, इस राष्ट्र से हटकर दूसरे राष्ट्र के लिए होगी। अर्थात रहेगा तो इसी देश में पर विचार बदल जाएगा इसलिए वे धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण कहते थे। उन्होंने हिन्दू का सैनिकीकरण और राजनीति के हिन्दूकरण पर जोर देते हुए कहा था कि प्रत्येक हिन्दू को सैनिक बनाओ और राजनीति हिन्दुत्व को केन्द्र बिन्दु बनाकर लागू करो। अर्थात् जैसे मुस्लिम और ईसाई देशों की राजनीति मुस्लिम और ईसाई हितों की सुरक्षा के लिए होती है तो भारत में ऐसा क्यों नहीं हो सकता?

वीर सावरकर धर्मान्तरितों का शुद्धिकरण करके पुनः हिन्दू बनाने के प्रबल पक्षधर थे। कई बार हिन्दू महासभा के अध्यक्ष भी रहे तथा उन्होंने हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्थान तीनों को सशक्त बनाने पर जोर दिया।

शेष पृष्ठ 1 का **कमल हासन के हिंदू आंतकवादी.......**

बयान उनकी गिरी हुई मानसिकता को दर्शाता है और उन्हें कोई अधिकार नहीं है कि खोखली प्रसिद्धि पाने के लिए इस तरह की बयानबाजी करें। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने कहा है कि कमल हासन ने आतंकवाद के साथ हिंदू शब्द का इस्तेमाल करके हर मुस्लिम बहुल इलाके में वोट हासिल करने की कोशिश की है लेकिन महासभा हिन्दुओं के प्रति इस तरह के विपरीत विचार कतई बर्दाश्त नहीं करता और आने वाले दिनों में कमल हासन को अपनी इस घटिया टिप्पणी का खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

शेष पृष्ठ 1 का **इस्लाम के मामले में चीन.......**

जहां उनमें कथित देशभक्ति के बारे में ब्रेनवाश किया जाता है। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने चीन के इस कदम की सराहना करते हुए कहा है कि भारत को भी इससे सीखना चाहिए और हिन्दुओं की इस धरती पर इस्लाम के पालन के लिए कोई कानून बनाना चाहिए। जिस तरह से इस्लाम के नाम पर देश में चल रहा है उससे नुकसान के सिवा कुछ नहीं होता दिख रहा है। ऐसे में चीन की तरह भारत को भी सख्त होने की आवश्यकता है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 12 का **भारत के गौरव का प्रतीक.......**

प्रसाद जी ने अपना वादा पूरा किया। सोमनाथ में दिए उनके भाषण को सभी अखबारों में प्रकाशित किया गया था, लेकिन उसे सरकारी विभागों के दस्तावेजों में दर्ज नहीं किया गया।'' कैसी विडम्बना थी कि भारत में उदारवाद और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में स्थापित नेहरू जी ने बहुत ही अनुदार और छोटी मानसिकता का परिचय दिया। नेहरूजी की यह अनुदार वृत्ति अभारतीय चरित्र का परिचय कराती है। भारत में ६० साल से एक ही दल के शासन के कारण इस नेहरूवादी अनुदार धारणा को ही सरकार द्वारा संरक्षण, पोषण और समर्थन मिलने के कारण बौद्धिक जगत, शिक्षा संस्थानों और मीडिया में भारत की यही अभारतीय अवधारणा प्रतिष्ठित करने का प्रयास हुआ है। इसलिए अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के विरोध में उभरने वाली आवाजें मीडिया और बौद्धिक जगत में ज्यादा तेज दिखाई देती है, लेकिन ऐसे करोड़ों हिन्दू (और मुस्लिम भी) हैं जो भारत की भारतीय अवधारणा को अंतःकरण से मानते हैं। इस 'भारत की सामूहिक अंतश्चेतना' की इच्छा, आकांक्षा और संकल्प को अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनाकर भारत के अपमान को निरस्त कर भारत के गौरव प्रतीक को प्रतिष्ठित करना है।

शेष पृष्ठ 9 का **हिन्दू राष्ट्र के उत्तराधिकारी........**

ही राजनीति शास्त्र की आधारशिला है उसके बिना राजनीति का कोई अस्तित्व ही नही। मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा रखने वाले सावरकर जी कहते थे कि हे मातृभूमि तेरे लिए मरना ही जीना है और तुझे भूल कर जीना ही मरना है। उन्होंने एक और मूलमंत्र स्थापित किया हिंदुत्व ही राष्ट्रीयत्व है और राष्ट्रीयत्व ही हिन्दुत्व है। मैं महान हुतात्मा को कोटि कोटि नमन करते हुए अंत में काले पानी का उल्लेख अवश्य करुंगा कि विश्व के इतिहास में दो जन्मों का आजीवन कारावास पाने वाले एकमात्र वीर सावरकर ने अंडमान निकोबार की काल कोठरी की सफेद दीवारों को कागज और कीलों को कलम बना कर लगभग १३५०० पंक्तियों में विभिन्न काव्य उकेर कर अपने दर्दनाक कष्टों को भी मातृभूमि की अथक सेवा में सुखमय बना लिया था। इससे पूर्व उनके द्वारा लिखा गया एक महत्वपूर्ण ग्रंथ १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम ने भारत सहित विश्व के अनेक क्रांतिकारियों को भी प्रेरित किया था। भारत के इस अनमोल धधकते अंगारे की २६ फरवरी १९६६ को प्राण ज्योति अनन्त में विलीन हो गई। इस प्रकार भारतीय इतिहास का एक और सुनहरा अध्याय करोड़ों–करोडों राष्ट्रवादियों को प्रेरणा देता आ रहा है और देता रहेगा जिससे एक दिन हमारा देश हिन्दू राष्ट्र बनकर उनके सपने को भी साकार करेगा। उन्ही के कथनानुसार वटवृक्ष का बीज राई से भी सूक्ष्म होता है किंतु उस बीज में जो स्फूर्ति होती है, जो महत्वाकाँक्षा होती है उसके कारण वह बढ़ते–बढ़ते प्रचंड वटवृक्ष का रूप ले लेता है जिसके नीचे गौओं के झुंड सुस्ताते हैं। धूप से त्रस्त लोगों को वह वटवृक्ष छाया प्रदान करता है। एक ऐसी ही महत्वाकाँक्षा मुझे भी सँजोने दो मेरा गीत मुझे गाने दो यदि हमें हिन्दू राष्ट्र के रूप में सम्मान और गौरव से रहना है जिसका हमें पूर्णाधिकार हैतो वह राष्ट्र हिन्दू ध्वज के नीचे ही अवतरित होगा यह मेरा उत्तराधिकार है मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 4 का **गुणकारी औषधि........**

तेल का उपयोग चित्रकारी एवं वार्निश बनाने में भी होता है। इसके ताजे हरे पत्ते की सब्जी बनाकर खाने से श्वास, कफ तथा वातग्रस्त रोगी को लाभ होता है।

अलसी भी एक ऐसा ही आहार है, जो शुद्ध, सात्विक, निरापद और ओमेगा–३ का खजाना है। यह हमारे शरीर को ऊर्जा देती है एवं थकावट को दूर करती है तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है। इतना ही नहीं, अलसी का सेवन हमें कई रोगों से बचाता भी है। रोगग्रस्त होने पर अलसी का सेवन, रोगों के निवारण में सहायक होता है। इस तरह अलसी एक गुणकारी एवं रोगनाशक औषधि है।

शेष पृष्ठ 2 का **परमार्थ पथ का.....**

लक्ष्य होगा, वैसे ही फल की प्राप्ति होगी। परमार्थ–लक्ष्य बन जाने पर तुम जो भी काम करते हो, वही करते रहो। उस दशा में स्वाभाविक ही तुम्हारा प्रत्येक कार्य परमार्थ लक्ष्य सहायक बन जाएगा। परमार्थ पथ के सहायक नियमों को समझ कर उन्हीं पर निश्चित होकर आगे बढ़ते चले जाओ। नियमों के अनुसार अपने जीवन को उन्हीं के अनुरूप क्रियात्मक साँचे में ढाल दो, सफलता अवश्य मिलेगी।

क्रियां और मार्ग भिन्न–भिन्न होते हुए भी सब साधकों का लक्ष्य एक ही होता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम और प्रातः स्मरणीय श्री भरत जी की क्रिया में भिन्नता थी किन्तु लक्ष्य दोनों का एक ही था, इसी प्रकार जगज्जननी माता श्री जानकी जी और देवी उर्मिला का लक्ष्य एक ही था किन्तु श्री जानकी जी वन को गईं और श्री उर्मिला जी अयोध्या के विशाल और वैभवपूर्ण महलों में ही रहीं, जिस प्रकार एक घड़ी के सब पुरजों की, उसके संचालन में आवश्यकता पड़ती है। सुई और बालकमानी दोनों अलग–अलग अपना काम करती हैं। दोनों का कार्य विभाग बंटा हुआ है किन्तु दोनों मुख्य हैं। आवश्यक हैं। इसी प्रकार सब साधकों का लक्ष्य एक हो और भगवत्कृपा से उनकी बुद्धि और परिस्थिति के अनुसार जो कार्य उनको मिला है उसी को दत्त चित्त होकर करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हों।

शेष पृष्ठ 5 का **श्रीकृष्ण और भावी........**

और अप्रेम से दबा हुआ संसार पंगु हो रहा है। हिंसामय जनतंत्र और हिंसामय एकतंत्र में विशेष अंतर नहीं है। अधिभौतिकवाद के धर्महीन तत्वों से संसार का उद्धार न होगा। उसमें अध्यात्मवाद की स्फूर्ति डालनी पड़ेगी। अधिभौतिकवाद यूरोप का आविष्कार नहीं। हमारे यहाँ चार्वाक के सिद्धान्त भी उसी पक्ष का प्रतिपादन करते हैं। पर यूरोप का ईश्वरहीन सुखवाद ही आज संसार पर आधिपत्य जमाए हुए है। इसलिए कर्मयोग के जरिए ही स्वार्थ को मिटाया जा सकता है। यूरोप के दार्शनिकों ने अध्यात्मवाद के बीज बो दिए हैं। अमेरिका में वेदान्त तत्वों का जिस उत्साह से स्वागत किया जा रहा है, भारत के धर्मोपदेशकों और दार्शनिकों का वहाँ जो सम्मान हो रहा है, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हवा का रुख किधर है। वही लोग जो स्वार्थ के सबसे बड़ा उपासक हैं, उससे अब विरक्त से होते जा रहे हैं। विचारशील समुदाय प्रत्येक राष्ट्र में बाह्य व्यवहारों से दूर होता जा रहा है। यूरोप ने अपनी परम्परागत संस्कृति के अनुसार स्वार्थ को मिटाने का प्रयत्न किया है और कर रहा है।

समष्टिवाद और बोलशेविज्म उसके वह नए आविष्कार हैं जिनसे वह संसार में युगांतर कर देना चाहता है। उनके समाज का आदर्श इसके आगे और जा ही न सकता था। किन्तु अध्यात्मवादी भारत इससे संतुष्ट होने वाला नहीं। वह अपने परलोक को ऐहिक स्वार्थ पर बलिदान नहीं कर सकता। वह अध्यात्मवाद से भटककर दूर जा पड़ा था, जिसके फलस्वरूप उसे एक हजार वर्ष तक गुलामी करनी पड़ी। अबकी वह चेतेगा तो संसार को भी अपने साथ जगा देगा, प्रेम का जयघोष सुनाई देगा और भगवान कृष्ण कर्मयोग के जन्मदाता के रूप में संसार के उद्धारकर्ता होंगे।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य.................................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

भारत के गौरव का प्रतीक है राम मंदिर

मनमोहन वैद्य

जैसे ही सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि उसकी प्राथमिकताएँ भिन्न हैं और अयोध्या में राम मंदिर के मामले की तेजी से सुनवाई करने का उसका कोई इरादा नहीं, वैसे ही यह मुद्दा जनता के बीच चर्चा का विषय बना। अयोध्या में राम मंदिर की तरह, सोमनाथ मंदिर पर भी एक मुस्लिम आक्रांता ने कई बार हमला कर उसे नष्ट किया था। यद्यपि राम मंदिर की जमीन के स्वामित्व का विवाद और सोमनाथ मंदिर के निर्माण की प्रक्रिया भिन्न है, तो भी १९४८ में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और डॉ. कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी के बीच सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण को लेकर हुई बहस पर गौर करना आज समीचीन होगा। डॉ. मुंशी की पुस्तक 'पिलग्रिमेज टू फ्रीडम' में दर्ज इस अविस्मरणीय बहस के चुनिंदा अंश यहाँ प्रस्तुत हैं (जो लोग पूरी बहस पढ़ना चाहते हैं, वे इस पुस्तक के पृष्ठ ५५६ से ५६६ तक पढ़ सकते हैं)।

क.मा. मुंशी लिखते हैं–''६ दिसम्बर १९२२ में मैं उस भग्न मंदिर की तीर्थ यात्रा पर निकला। वहाँ पहुँचकर मैंने मंदिर को भयंकर दुरावस्था में देखा–अपवित्र, जला हुआ और ध्वस्त, पर फिर भी वह दृढ़ खड़ा था, जैसे हमारे साथ की गई कृतघ्नता और अपमान को न भूलने का संदेश देता हुआ। उस दिन सुबह जब मैंने पवित्र सभामंडप की ओर कदम बढ़ाए तो मंदिर के खंभों के भग्नावशेषों और बिखरे पत्थरों को देखकर मेरे अंदर तिरस्कार की ऐसी अग्निशिखा प्रज्ज्वलित हुई कि बता नहीं सकता।'' हमारे राष्ट्रीय नेता दो अलग–अलग विचारों में बंटे थे। सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण उस समय भारत के गृह मंत्री सरदार पटेल द्वारा शुरू किया गया था, जिसे केन्द्र में तत्कालीन कैबिनेट मंत्री क.मा. मुंशी ने सम्पन्न किया था और भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उसका उद्घाटन किया था।

क.मा. मुंशी आगे लिखते हैं–''नवंबर १९४७ के मध्य में सरदार प्रभासपाटन के दौरे पर थे, जहाँ उन्होंने मंदिर में दर्शन किए। एक सार्वजनिक सभा में सरदार ने घोषणा की कि 'नए साल के इस शुभ अवसर पर हमने फैसला किया है कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण करना चाहिए। यह एक पवित्र कार्य है, जिसमें सभी को भाग लेना चाहिए।' इसकी चर्चा तत्कालीन केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में हुई। ''कैबिनेट की बैठक के अंत में जवाहरलाल ने मुझे बुलाकर कहा, ''मुझे आपका सोमनाथ के पुनरुद्धार के लिए किया जा रहा प्रयास अच्छा नहीं लग रहा। यह हिन्दू पुनरुत्थानवाद है।' मैंने जवाब दिया, मैं घर जाकर जो कुछ भी घटित हुआ है, उसके बारे में आपको जानकारी दूँगा।'' क. मा. मुंशी आगे लिखते हैं–''२४ अप्रैल १९५१ को मैंने उन्हें (श्री नेहरू) एक पत्र लिखा था, जिसे मैं आगे अक्षरशः पुनः प्रस्तुत कर रहा हूँ–'सोमनाथ के संबंध में आपने कैबिनेट में स्पष्ट रूप से मेरा नाम लिया। मुझे खुशी है कि आपने ऐसा किया, क्योंकि मैं अपने किसी भी विचार या कार्य को छिपाना नहीं चाहता, खासकर आपसे, जिन्होंने बीते महीनों में मुझ पर इतना भरोसा किया है। ''मैंने सोमनाथ को धर्म और संस्कृति के एक केंद्र, एक विश्वविद्यालय और एक कृषि क्षेत्र के तौर पर विकसित करने का बीड़ा उठाया है तो उसके पीछे सीधा–सादा कारण है कि मुझे यह कार्य सौंपा गया है। ऐसे किसी कार्य में सहायता प्रदान करते समय मेरा वकील होना या एक आम नागरिक या मंत्री होना सिर्फ एक संयोग मात्र है......

मैंने अपने साहित्यिक और सामाजिक कार्यों के माध्यम से हिन्दू धर्म के कुछ पहलुओं की आलोचना करते हुए उन्हें नया रूप देने या बदलने का विनम्र निवेदन किया है, इस विश्वास के साथ कि यह छोटा सा कदम ही आधुनिक वातावरण में भारत को एक उन्नत और सशक्त राष्ट्र बना सकता है। सोमनाथ में प्रतिमा की प्राण–प्रतिष्ठा के साथ एक और घटना जुड़ी हुई थी। जब प्राण–प्रतिष्ठा का समय आया, तो मैंने राजेंद्र प्रसाद (भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति) से संपर्क किया और उनसे समारोह का उद्घाटन करने का निवेदन किया। प्रधानमंत्री के साथ मेरा पत्राचार उनसे छिपा नहीं था। उन्होंने वादा किया कि प्रधानमंत्री का चाहे जो दृष्टिकोण हो, वह आएँगे और प्राण–प्रतिष्ठा भी करेंगे। जैसे ही यह घोषणा की गई कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद मंदिर का उद्घाटन करने आ रहे हैं, जवाहरलाल ने उनके सोमनाथ जाने का जोरदार विरोध किया। लेकिन राजेन्द शेष पृष्ठ 11 पर

कबिरा खड़ा बजार में

कब तक जारी रहेगा चुनाव प्रक्रिया पर संदेह

अभी कुछ दिनों पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने ईवीएम और वीवीपैट की पर्चियों के मिलान वाली विपक्ष की याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने कहा कि हमें इस मामले में दखलअंदाजी नहीं करनी है। लेकिन इसके बावजूद विपक्षी दलों के द्वारा लगातार कुछ न कुछ मांग करके विवाद उत्पन्न किया जाता रहा है। मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने कहा कि एक ही मामले को बार–बार क्यों सुनें? बीते महीने सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को निर्देश दिया था कि मतगणना के लिए ईवीएम के साथ ही वीवीपैट की पर्चियों के मिलान की प्रक्रिया प्रति विधानसभा क्षेत्र में एक मतदान केंद्र से बढ़ाकर पांच मतदान केंद्र की जाए। हालांकि, कोर्ट ने प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में कम से कम ५० फीसदी पर्चियों का मिलान करने का विपक्षी नेताओं का अनुरोध तब भी अस्वीकार कर दिया था। पुनर्विचार याचिका में कहा गया था कि वीवीपैट पर्चियों के मिलान में सिर्फ दो फीसदी की वृद्धि पर्याप्त नहीं होगी और इससे न्यायालय के आदेश से पहले की स्थिति में बहुत अधिक बदलाव नहीं आएगा। इससे चुनाव प्रक्रिया में जनता का विश्वास बढ़ाने का मकसद भी पूरा नहीं हो पाएगा। इस व्यवस्था के लिए २१ विपक्षी पार्टियों ने याचिका दायर की थी। मांग यह थी कि चुनाव आयोग ५० फीसदी वीवीपैट पर्चियों के ईवीएम से मिलान का आदेश दे। कोर्ट के फैसले के बाद याचिकाकर्ताओं की ओर से अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि २१ पार्टियों में पूर्व और आज के मुख्यमंत्री शामिल थे। हम इस फैसले का सम्मान करते हैं। हमारी मांग की वजह से एक की बजाय पांच बूथ पर वीवीपैट मिलान की बात स्वीकारी गई है। बहरहाल, चुनाव आयोग ने काफी पहले ही साफ कर दिया था कि लोकसभा चुनाव में सौ फीसदी ईवीएम मशीनें वीवीपैट सुविधा से युक्त होंगी। यानी हरेक ईवीएम में बटन दबाने के बाद एक पर्ची निकलेगी जिसमें यह दर्ज होगा कि मतदाता ने वोट किस पार्टी को दिया। विवाद होने पर उन पर्चियों के जरिए सच्चाई की जांच की जा सकेगी। इस ठोस आश्वासन ने राजनीतिक दलों को काफी हद तक आश्वस्त कर दिया। जो पार्टियां मत पत्रों पर मुहर लगाने की पुरानी पद्धति अपनाने की बात कहने लगी थी, उसने भी अपनी वह मांग छोड़ दी। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू का कहना है कि दुनिया के १९१ देशों में से मात्र १८ देशों ने ईवीएम को अपनाया है, जिनमें से तीन देश सबसे अधिक आबादी वाले हैं। उनका मानना है कि ईवीएम के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है और उनमें गड़बड़ी भी पैदा होती है। इसके साथ ही इनकी प्रोग्रामिंग भी की जा सकती है। उन्होंने यह जानने की मांग की थी कि नए वीवीपैट में वोटर स्लिप मात्र तीन सेकंड में कैसे दिखाई देता है, जबकि इसे सात सेकंड में दिखाई देना चाहिए। अब जबकि सुप्रीम कोर्ट ने विपक्षी दलों की मांग खरिज कर दी है, तो उन्हें निर्वाचन प्रणाली पर संदेह करना बंद करना चाहिए और विपक्षी दलों को अपना विधवा विलाप रोकना चाहिए।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 22 मई से 28 मई 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।